तिरुमल तिरुपति देवस्थान
सप्तगिरि
सचित्र मासिक पत्रिका
जनवरी - 2019, रु.5/-

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

श्रीनिवासमंगापुरम्
श्री कल्याणवेंकटेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

२४.०२.२०१९ से ०४.०३.२०१९ तक

२४.०२.२०१९ रविवार
दिन - तिरुचि उत्सव, ध्वजारोहण
रात - महाशेषवाहन

२५.०२.२०१९ सोमवार
दिन - लघुशेषवाहन
रात - हंसवाहन

२६.०२.२०१९ मंगलवार
दिन - सिंहवाहन
रात - मोतीवितानवाहन

२७.०२.२०१९ बुधवार
दिन - कल्पवृक्षवाहन
रात - सर्वभूपालवाहन

२८.०२.२०१९ गुरुवार
दिन - पालकी में मोहिनी अवतारोत्सव
रात - गरुडवाहन

०१.०३.२०१९ शुक्रवार
दिन - हनुमद्वाहन
सायं - वसंतोत्सव
रात - गजवाहन

०२.०३.२०१९ शनिवार
दिन - सूर्यप्रभावाहन
रात - चंद्रप्रभावाहन

०३.०३.२०१९ रविवार
दिन - रथ-यात्रा
रात - अश्ववाहन

०४.०३.२०१९ सोमवार
दिन - पालकी उत्सव, तिरुचि उत्सव,
तीर्थवारि अवभृथोत्सव, चक्रस्नान
रात - तिरुचि में ध्वजावरोहण

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

तिरुपति
श्री कपिलेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

२५.०२.२०१९ से ०६.०३.२०१९ तक

२५.०२.२०१९ सोमवार
दिन - (पालकी उत्सव) ध्वजारोहण
रात - हंसवाहन

२६.०२.२०१९ मंगलवार
दिन - सूर्यप्रभावाहन
रात - चंद्रप्रभावाहन

२७.०२.२०१९ बुधवार
दिन - भूतवाहन
रात - सिंहवाहन

२८.०२.२०१९ गुरुवार
दिन - मकरवाहन
रात - शेषवाहन

०१.०३.२०१९ शुक्रवार
दिन - तिरुचि में उत्सव
रात - अधिकारनंदिवाहन

०२.०३.२०१९ शनिवार
दिन - व्याघ्रवाहन
रात - गजवाहन

०३.०३.२०१९ रविवार
दिन - कल्पवृक्षवाहन
रात - अश्ववाहन

०४.०३.२०१९ सोमवार
दिन - रथ-यात्रा
रात - नंदिवाहन (महाशिवरात्रि)

०५.०३.२०१९ मंगलवार
दिन - पुरुषामृगवाहन
रात - (कल्याणोत्सव) तिरुचि उत्सव

०६.०३.२०१९ बुधवार
दिन - सूर्यप्रभावाहन पर नटराजस्वामी,
त्रिशूलस्नान
रात - ध्वजावरोहण, रावणासुरवाहन

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः।
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन॥

(- श्रीमद्भगवद्गीता ४-९)

हे अर्जुन! मेरे जन्म और कर्म दिव्य अर्थात् निर्मल और अलौकिक हैं - इस प्रकार जो मनुष्य तत्त्वसे जान लेता है, वह शरीर को त्यागकर फिर जन्म को प्राप्त नहीं होता, किंतु मुझे ही प्राप्त होता है।

एतत्पुण्यं पापहरं धन्यं दुःख प्रणाशनम्।
पठतां श्रुण्वतां वापि विष्णोर्माहात्म्य मुत्तमम्॥

(- गीता मकरंद, गीता का प्रभाव-३)

विष्णु का यह उत्तम माहात्म्य (गीताशास्त्र) पाठकों और श्रोताओं को पुण्य लाभ कराएगा। यह पापनाशक दुःखविनाशक एवं धन्यकारक है।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास

''मानव सेवा ही माधव सेवा है'' - इसी लक्ष्य के साथ, ति.ति.दे. विविध हितकर कार्यों का निर्वहण समाज के लिए कर रही है। इस क्रम में ति.ति.दे. ने १९४३ वर्ष में अनाथ बाल बच्चों के संरक्षणार्थ 'श्री वेंकटेश्वर बाल मंदिर (तिरुपति) न्यास' की स्थापना की। आजकल 'श्री वेंकटेश्वर बालमंदिर न्यास', श्री वेंकटेश्वर जलनिधि योजना, कल्याणमस्तु न्यास, श्री वेंकटेश्वर समाचार सांकेतिक न्यास आदि को अपने में मिलाकर 'श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास' के रूप में परिणत हुआ है।

श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास के लक्ष्य

१. अनाथ बाल बालिकाओं, वृद्ध, निराश्रित, अभागे, निर्धन एवं निर्बलवर्ग के व्यक्तियों की अभिवृद्धि, रक्षा, उनके कुशल क्षेम के लिए धर्मशालाओं एवं आवास प्रदत्त करना। अनाथ एवं निर्धन विद्यार्थी-विद्यार्थियों को आर्थिक रूप से सशक्त करना।

२. दिव्यांगों एवं मनोरोगियों के लिए आवश्यक चिकित्सा की सुविधाओं की व्यवस्था करना एवं उनके जीवन शैली को सुधारना। इस प्रक्रिया में किसी वर्ग एवं वर्ण भेद को त्यागकर सभी लोगों को एक ही स्तर में स्वीकार करना।

३. बाढ़, अकाल जैसी प्रकृतिक विपत्ति के संभवित समय में, अग्निफैलान जैसी अवांछनीय विपत्ति के उठने पर, तत्क्षण उनकी सहायता के लिए तैयार रहना।

४. जो बच्चे बहरे या मूक होते हैं, उनकी उन्नति के लिए पुनर्वास केन्द्रों की व्यवस्था करना।

५. उपर्युक्त लोप से त्रस्त ग्रामीण बाल बच्चों के लिए आवश्यक उपकरणों का वितरण करने के साथ-साथ उनको शिक्षा प्रदान करना।

६. समाज में पीने के पानी, जो अत्यधिक आवश्यक पेय पदार्थ है, उसको उपलब्ध कराना, तिरुमल पंचायती तथा तिरुपति नगर पालिका के लिए आवश्यक जल संसाधन की पूर्ति के लिए पुल एवं तालाबों का निर्माण करना। पानी के मितव्यय के लिए आवश्यक कार्यवाही करना।

७. पाठ्य पुस्तकों के साथ, इंटरनेट (अंतर्जाल) जैसी आधुनिक, सांकेतिक सुविधाओं को उपलब्ध कराकर, उसके द्वारा हमारे देश का इतिहास, सांस्कृतिक दाय प्राप्त संपदा को भावी पीढियों तक पहुँचाना।

८. समाज में शिष्टाचार तथा नैतिक मूल्यों के विकास के लिए युवा पीढ़ी में आत्मविश्वास को बढाना।

९. विवाह संपन्न कराने के द्वारा हितैषी के रूप में वधू-वर को आत्मविश्वास तथा गौरव के साथ जीवनयापन करने के लिए योग्य बनाना।

१०. जो व्यक्ति उपर्युक्त कार्यक्रमों में कार्यरत हैं, उन व्यक्तियों तथा संस्थाओं की मदद करना।

११. जो भी कार्य चालू हैं उनको बिना किसी लाभ की अपेक्षा किये, लक्ष्यसिद्धि को प्राप्त करना।

श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास के लिए इस रूप में चंदा भेजिए...

१. इस योजना के लिए कम से कम रु. १,०००/- भेजें।

२. अगर, चंदा रु. १०००/- से कम हो, तब उसे श्रीवारि हुण्डी के खाते में जमा किया जाता है और चंदादार को इसके बारे में कोई सूचना नहीं दी जाती है। सभी चंदादारों की चंदा किसी राष्ट्रीय बैंक में जमा की जाती हैं और उस पर जो सूद मिलता है, उसे उक्त योजनाओं के लिए खर्च किये जाते हैं। आप, अपनी चंदा को किसी राष्ट्रीय बैंक से, चेक या डिमांड़ ड्राफ्ट के द्वारा 'श्री कार्यनिर्वहणाधिकारी, श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास, ति.ति.दे.' के नाम पर लेकर, 'प्रधान गणांकाधिकारी (चीफ़ अकौण्ट्स आफ़ीसर), (दूरभाष - ०८७७-२२६४२५८), ति.ति.दे., तिरुपति-५१७ ५०१' के नाम पर भेज सकते हैं।

सप्तगिरि

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं
ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन,
वेङ्कटेश समो देवो
न भूतो न भविष्यति।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की
सचित्र मासिक पत्रिका

वर्ष-४९ जनवरी-२०१९ अंक-८

मुखचित्र
उभयदेवेरियों सहित श्री मलयप्पस्वामी, तिरुमल।

चौथा कवर पृष्ठ
श्री पद्मावतीदेवी, तिरुचानूर।

विषयसूची

अन्य विवरण के लिएः
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543. Mobile No:9866329955.

website: www.tirumala.org or www.tirupati.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है। सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri_helpdesk@tirumala.org

जीवन चंदा	..	रु.500-00
वार्षिक चंदा	..	रु. 60-00
एक प्रति	..	रु. 05-00

संपादकीय

मन ही 'आनंदनिलय' है

भगवान हम सब के हैं। उसी भगवान के दर्शन पाने के लिए लाखों लोग दूरदस्त या बोझिल न मानकर अनुदिन आते रहते हैं। उन भक्तों को आसानी से भगवान का दर्शन हो, इसके लिए ति.ति.दे. ने कई विशेष पद्धतियों का समय-समय पर पालन कर रही हैं। उनमें से एक विशेष पद्धति यह है कि 'लक्कीडिप' द्वारा स्वामी की सेवाएँ प्राप्त हों, ऐसा मौका ति.ति.दे. ने भक्तों को दिया।

हालांकि, कई भक्तों का मानना है कि उनके इच्छा के अनुसार ऐसा मौका उन तक नही आरही है, इससे वे दुःखी हो रहे हैं। 'लक्कीडिप' पद्धति में किसी का भी भागीदारी नही होती है। अपने-अपने भाग्यविशेष के कारण स्वामी की सेवा टिकटें उपलब्ध होते हैं। उनको सेवाटिकट न मिलने से दुःखी होने के बजाय, भगवान से ये प्रार्थना करें कि हमें जल्दी से तुम्हारी पूजा करने का भाग्य प्रदान करो। यदि भगवान का अनुग्रह प्राप्त हो, तो हमारे आशय जरूर पूरे होंगे।

भगवान की कृपा प्राप्त करने के लिए कई महर्षियों सहित अनेक वर्ष निरीक्षण किया। महाभागवतम् में गजेन्द्र ने भी हजार साल मगरमच्छ के साथ संघर्ष करने के बाद, अचंचल भक्ति के साथ श्री महाविष्णु की प्रार्थना करने पर ही स्वामी प्रकट हुए। इसलिए हमें भी स्वामी की कृपा पाने के लिए भक्तिभाव से प्रार्थना करते हुए प्रतीक्षा करना चाहिए, न कि असहिष्णुता दिखाना चाहिए। असहिष्णुता मानसिक स्वास्थ्य के लिए अच्छा नही है। इससे भक्ति भावना दूर होती है।

तिरुमल आये हुए भक्तजन भी सब से, भक्ति भाव के साथ, संयम से रहकर स्वामी का दर्शन करके, उनके कृपापात्र बने। भक्तजन अपने आप दूसरे भक्तों को भी स्वामी का दर्शन करने का मौका देते हुए, 'क्यू' पद्धति में बाधा न डालते हुए, धक्का देना या भगदड न मयाते हुए, शांति से, सभी भक्तजन को दर्शन करने का मौका देने की आवश्यकता हैं।

लाखों भक्तजन 'क्यू' में आते समय, केवल हम ही भगवान को ज्यादा समय देखने के लिए वहीं पर रूक जाना, पीछे आनेवाले भक्तजन को भगवान का दर्शन करने का मौका न देना ही होता है। केवल एक पल भगवान को श्रद्धा से भक्तिभाव के साथ दर्शन करने पर, उस मधुर पल कई सालों तक मन में स्थिर हो जाती है। उस रूप को मनोनेत्र से दर्शन करते हुए अपनी यात्रा को पूरी तरह से सफल बनाना चाहिए।

पूर्व कालीन युगों में तपस्या करनेवाले ऋषि भी भगवद् अनुग्रह प्राप्त करने के लिए कई युगों तक तपस्या करते रहें। लेकिन हम कलियुगवासियों को, बिना तपस्या किये, जब भी चाहें तब तिरुमल पहूँचकर, कुछ ही घंटों में उस परंधाम का दर्शन करने का महान अवसर प्राप्त हो रही है। यह कलियुग की विशेषता है। कलियुगवासी अपने पूरे मन से, अत्यंत भक्ति के साथ कुछ पल स्वामी की प्रार्थना करने पर, स्वामी का अनुग्रह प्राप्त हो जाती है। यही इस युग की विशेषता है।

ऊपर कहीं गयी बातों को ध्यान में रखते हुए भक्तजन, निराशा, उदास या असहिष्णुता का शिकार न होते हुए, भक्तिभाव से और सहनशीलता से, आनंदनिलय भगवान का दर्शन करने में अपना पूरा सहयोग दें। ऐसा करके अपने मन को खुशी से भर दीजिए।

श्री महापूर्ण स्वामीजी

- श्री चन्द्रकान्त घनश्याम लहोती

तिरुनक्षत्र - मार्गशीष मास, ज्येष्ठा नक्षत्र

अवतार स्थल - श्रीरंगम्

शिष्यगण - श्री रामानुजाचार्य, मलैकुनियनिन्नार, आरियुरिल् श्री शठगोप दासर, अणियैरंगतमनुदानार पिळ्ळै, तिरुवैक्कुलमुदैयार भट्टर इत्यादि।

स्थल जहाँ से परमपद को प्रस्थान हुएँ - चोल देश के पशुपति देवालय में।

श्री महापूर्ण स्वामीजी का जन्म श्रीरंगम् में हुआ और वें महापूर्ण, परांकुश दास, पूर्णाचार्य के नामों से जाने गए है। वह श्री यामुनाचार्य स्वामीजी के मुख्य शिष्यों में से है और श्री रामानुजाचार्य को श्रीरंगम् लाने का उपकार उन्ही को है। श्री यामुनाचार्य स्वामीजी के समय के बाद, सारे श्रीरंगम् के श्रीवैष्णव श्री महापूर्ण स्वामीजी से विनती करते है की वह श्री रामानुजाचार्य को श्रीरंगम् में लाये। अतः वह श्रीरंगम् से सपरिवार कांचीपुरम की ओर चले। इसी दौरान श्री रामानुजाचार्य भी श्रीरंगम् की ओर निकल पडे। आश्चर्य की बात यह थी की वे दोनों मधुरांतकम में मिलते है और वहीं श्री महापूर्ण स्वामीजी श्री रामानुजाचार्य का पञ्चसंस्कार करते है और कांचीपुरम पहुँचकर श्री रामानुजाचार्य को सांप्रदाय के अर्थ बतलाते है। इसी बीच श्री रामानुजाचार्य की धर्मपत्नी ने श्री महापूर्ण स्वामीजी का अपमान किया जिसकी वजह से श्री महापूर्ण स्वामीजी दुःखित होकर अपने परिवार के साथ श्रीरंगम् बापस चले गए।

हमारे पूर्वाचार्यों ने श्री महापूर्ण स्वामीजी के जीवन की ऐसी बाते अपने श्रीसूक्तियों में लिखे है जिसे अब प्रस्तुत करेंगे।

कहते है की श्री महापूर्ण स्वामीजी सद्गुणों के भण्डार है और श्री रामानुजाचार्य के प्रति असीमित लगाव था। जब उनकी बेटी को अलौकिक सहायता की जरूरत थी तब इसके हल के लिये अपनी बेटी को रामानुजाचार्य के पास जाने का उपदेश देते है।

एक बार श्री रामानुजाचार्य अपने शिष्यगण के साथ चल रहे थे यह अचानक श्री महापूर्ण स्वामीजी उनको दण्डवत प्रणाम करते है। तब श्री रामानुजाचार्य इसको स्वीकार समर्थन नही करते क्योंकि/अपने आचार्य का किसी भी शिष्य को प्रणाम स्वीकार नही करना चाहिये। इस क्रिया से सभी शिष्य आश्चर्य चकित होते देखर श्री रामानुजाचार्य अपने आचार्य से पूछते है उन्होने ऐसा क्यों किया तब श्री महापूर्ण स्वामीजी कहते है की श्री रामानुजाचार्य में वह अपने आचार्य श्री यामुनाचार्य को देखते है इसीलिये उन्होने दण्डवत प्रणाम किया। वार्ता माला में एक विशेष वचन सूचित हैं की आचार्य को अपने शिष्य के प्रति बहुत सम्मान होना चाहिए और श्री महापूर्ण स्वामीजी उस वचन के अनुसार रहे हैं।

श्री महापूर्ण स्वामीजी श्री मारनेरीनम्बि जो शूद्र होने के भावजूद (श्री यामुनाचार्य के शिष्य हुए और फिर एक महान श्रीवैष्णव बने का अन्तिम) संस्कार करते है जब वह परमपद को प्रस्थान हुए। इस क्रिया का

वार्षिक तिरुनक्षत्र के संदर्भ में... (०४.०१.२०१९)

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

सूचना

लाइसेंस प्राप्त पिस्तोल और खतरनाक औजारों जैसे चीजों को मंदिर में ले जाना मना है।

- प्रजासंपर्काधिकारी, ति.ति.दे., तिरुपति।

समर्थन अधिकतर श्रीवैष्णव नही करते और वे श्री रामानुजाचार्य को इस घटना के बारे में बताते है। यह जानकर जब श्री रामानुजाचार्य श्री महापूर्ण स्वामीजी से पूछते है तब श्री महापूर्ण स्वामीजी कहते है की उन्होने सीधा आळवार के श्रीसूक्तियों तिरुवाय्मोळि - (पयिलुम् चुडरोळि ३.७.) और नेडुमार्क्कडिमै (८.१०) का पालन किया और यही श्री अळगिय मनवाळ पेरुमाळनायणार अपने आचार्य हृदय में कहते है और यह हमारे गुरुपरंपरा प्रभाव में भी है।

एक बार पेरियपेरुमाळ को कुछ कुकर्मियों से खतरा था यह जनकारी प्राप्त कर श्रीवैष्णव निश्चय करते है की श्री महापूर्ण स्वामीजी ही सही व्यक्ति है जो देवालय की प्रदक्षिणा कर सकते है। तब वह श्री कूरेश स्वामीजी को अपने साथ प्रदक्षिणा करने को बुलाते है क्योंकि श्री कूरेश स्वामीजी ऐसे एक मात्र भक्त थे जिनको परतन्त्रता का दिव्य स्वरूपज्ञान मालूम था यही विषय नम्पिळ्ळै (१०.७) अपने तिरुवाय्मोळि ईडु व्याख्यान में बताते हैं।

इसके पश्चात् एक बार शैव राजा ने श्री रामानुजाचार्य को अपने दरबार में आमंत्रित किया जिससे समाधान में श्री कूरेश स्वामीजी (श्री रामानुजाचार्य के वेष में) और बूढे श्री महापूर्ण स्वामीजी उनके साथ गए। यह शैव राजा को श्री रामानुजाचार्य के प्रति सद्भावना नही होने के कारण अपने अनुचरों को आज्ञा देते है की श्री रामानुजाचार्य के आँखें नोच लें तब श्री महापूर्ण स्वामीजी राजी होकर स्वयं को समर्पित करते है और उनकी आँखें नोच ली जाती है। अपने वृद्धावस्था होने के कारण श्री माहपूर्ण स्वामीजी परमपदम को प्रस्थान करते है। कहते हैं की उनके अन्तिम समय के इस घटना से एक सीख मिलती है।

श्री कूरेश स्वामीजी और श्री महापूर्ण स्वामीजी की बेटी कहते है कि जैसे भी हो आप अपने प्राणों को न त्यागें क्योंकि श्रीरंगम् अधिक नही है यानि वह अपने प्राण तभी त्याग करें जब वह श्रीरंगम् पहुँचे। यह सुनकर श्री महापूर्ण स्वामीजी तुरन्त रुकने को कहते है और फिर कहते है अगर इस घटना लोग कुछ इस प्रकार समझेंगे की अपने प्राणों का त्याग श्रीरंगम् में करना जरूरी है तब वह एक श्रीवैष्णव के वैभव को सीमित करने के बराबर है और यह कदाचित भी नही होना चाहिये। अतः वह वही अपने प्राणों का त्याग करते है।

आल्वार कहते है - ''वैकुण्ठमागुम् तम् ऊरेल्लाम्'' - यानि जहाँ श्रीवैष्णव रहते है वही वैकुण्ठ हो जाता है। अतः हमारे लिये यह जरूरी है की हम जहाँ भी हो भगवान पर पूर्णनिर्भर रहे क्योंकि ऐसे कुछ लोग जो दिव्यदेशों में रहने के भावजूद नही समझते की उन पर भगवान की असीम कृपा और प्रशंशनीय आशीर्वाद है और इसके विपरीत में ऐसे श्रीवैष्णव है जो सदैव भगवद्चिंतन में रहते है।

अतः हम देख सकते है की श्री महापूर्ण स्वामीजी कितने उत्कृष्ट श्रीवैष्णव थे और वह भगवान पर पूरि तरह निर्भर थे। श्रीसहस्रगीति और श्री शठकोप स्वामीजी प्रति असीमित लगाव के कारण उन्हे परांकुश दास के नाम से जाना जाता है। उनके तनियन से हमें यह पता चलता है की वह भगवान श्रियःपति के कल्याण गुणों में इतने निमग्न थे की वें इस दिव्यानुभव से सुखी और संतुष्ठ थे।

श्री महापूर्ण स्वामीजी की तनियन

धनुर ज्येष्ठा समुद्भूतं यामुनांघ्रि समाश्रयम।
यतीन्द्र प्रथमाचार्यम महापूर्णमहं भजे।।

कमलापति कल्याण गुणामृत निषेवया।
पूर्ण कामाय सततं पूर्णाय महते नमः।।

माँ गोदादेवी का अद्भुत व्यक्तित्व

- डॉ.के.एम.भवानी

प्रकृति और पुरुष के बीच में जो संबंध है वह अद्वितीय है। यह भक्ति के विषय में भी लागू होता है। हमारे भारतीय पुराणों में ऐसी कई कहानियाँ है जो आज के हमारे वर्तमान युग के लोगों के अंदाज के बाहर होते हुए भी हमें प्रभावित करती हुई हमें भक्ति मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती हैं। हमारे मुनि, ऋषिगण प्रकृति(स्त्री) बनकर परमात्मा को पुरुष के रूप में आराधना करके तर गए। कहा जाता है कि द्वापर युग में जितनी भी गोपियाँ थीं वे सब मुनिगण ही हैं। भगवान से वर माँगकर भक्ति सागर में डूबकर आनंद पाने के उद्देश्य से वे अवतरित हुए थे। भगवान के दशावतारों में परिपूर्ण अवतार माने जानेवाला श्रीकृष्णावतार सबका मनभावन अवतार है। बालदशा से लेकर अवतार समाप्ति तक की हर एक घटना मन मोहक ही है। श्रीकृष्ण के नटखटपन भरी बाल्य चेष्टाओं से लेकर गोवर्धन पहाड को उठाकर यादवों की रक्षा करना, कालीय मर्दन करके गोपबालकों की रक्षा करना, गोपियों के वस्त्र उठाकर ले जाना, कंस को मारना आदि लीलाओं के साथ जगद्गुरु बनकर अर्जुन को 'गीतोपदेश' करना आदि से प्रभावित होकर कई भक्तगण श्रीकृष्ण की आराधना में लीन होकर तर गए। भवसागर को पार कराने का उद्धारक के रूप में सूरदास, मीराबाई और अष्टछाप कवियों ने कृष्ण की पूजा की।

गोदापरिणयोत्सव (१६.०१.२०१९) के अवसर पर...

सन् सातवीं शताब्दी के दक्षिण भारत की गोदादेवी एवं आंडाल की कहानी भक्तों को शह दिखानेवाली और प्रेरणादायक है। भगवती लक्ष्मी की अंश से जनमी गोदा का जन्म तमिलनाडु के श्रीविल्लिपुत्तूर में सन् ७१६ नल नाम साल में आषाढ़ शुक्ल चतुर्दशी के दिन पुब्बा नक्षत्र में हुआ था। वह विष्णुचित्त नाम से विख्यात पेरियाल्वार की पोषित पुत्री थी। महान विष्णु भक्त विष्णुचित्त रोज अपने पुष्पवन के फूलों से मालाएँ बनाकर भगवान रंगनाथ को अलंकृत करता था। एक दिन उन्हें अपने बगीचे में ही एक बच्ची मिलती है तो वह उसे 'कोदै' नाम से बहुत लाड-प्यार से पालन-पोषण करता है। कोदै ही बाद में गोदा नाम बन गई। गोदा बडी होने के बाद श्रीरंगनाथ की भक्ति में तल्लीन होकर उससे ही

भक्ति में लीन गोदा रोज पुष्पमालाएँ तैयार होने के बाद खुद उसे पहनकर बाद में रंगनाथ को सजाने के लिए मंदिर भेजती है। एक दिन विष्णुचित्त यह बात जानकर बहुत दुःखी होता है और वह उस दिन भगवान को माला समर्पण नहीं करता है तो खुद श्रीरंगनाथ उन्हें आदेश देता है कि उन्हे गोदा के पहनने के बाद ही माला समर्पण करना है। उन्हे ऐसा ही पसंद है। तो विष्णुचित्त बहुत प्रसन्नता से ऐसा ही करता ही रहता है।

कहा जाता है कि द्वापर युग में गोपियाँ कात्यायनी व्रत करके भगवान श्रीकृष्ण को पा सकी थीं इसीलिए श्रीकृष्ण का अंश समझा जानेवाला भगवान रंगनाथ को पाने के लिए गोदा भी अपनी सहेलियों से मिलकर कात्यायनी व्रत करना चाहती है। गोदादेवी से किया गया यही व्रत 'धनुर्मास व्रत' या 'तिरुप्पावै' नाम से भी जाना जाता है।

अगहन मास में हर दिन एक-एक गीत के अनुसार पूरे तीस गीतों को द्रविड भाषा में लिखी गयी गोदादेवी की यह रचना तिरुप्पावै नाम से आज भी हर वैष्णव मंदिर में अगहन मास में गाया जाता है। गोदादेवी की यह अद्भुत भक्ति रचना उन्हे आल्वारों में एक बना दिया। विष्णु के अंश से जन्म लेकर, विष्णु भक्ति की रचनाएँ किए भक्तों को आल्वार नाम से जाना जाता है। ऐसे १२ आल्वार हैं तो उनमें स्त्री आल्वार सिर्फ गोदा ही है।

'तिरुप्पावै' की विशेषता

तिरुप्पावै में जो तीस गीत हैं उन्हें 'पाशुर' कहते हैं। 'तिरु' मंगल सूचक शब्द है। इसे 'शुभ', 'पवित्र' अर्थों में भी लिया जाता है। पावै का अर्थ है 'पवित्र'। अपनी इच्छापूर्ति के लिए गाए जानेवाली इन गीतों को तेलुगु भाषा में भी अनुवाद किया गया है। इनमें पहली पाँच गीतों में भूमिका और तिरुप्पावै का मुख्य उद्देश्य बताया गया है। कहा गया है कि सच्चे दिल से भगवान श्रीकृष्ण की पूजा करने से मानव से किए गए सारे पाप मिट जाते हैं। कहा गया है कि हे भूलोकवासियाँ! आइए! हम इस पवित्र अगहन में वैकुंठवासी भगवान की गुणगान करेंगें। प्रातःकाल में उठकर, नहाकर, भगवान का यशगान करने से हमारी सारी इच्छाएँ पूरी हो जाएँगे।

उसके बाद के दस पाशुरों में गोदादेवी अपनी सहेलियों से मिलकर फूलों को चुनती हुई, गाँव के माहौल का वर्णन करती है। पक्षियों के चहचहाहट, रंग-बिरंगे फूल, मक्खन-मंथन में आनेवाली संगीत ध्वनियाँ, गायों के चलने से उसके गले की घंटियों की ध्वनि, मंदिरों के घंटानाद आदि के वर्णन हैं।
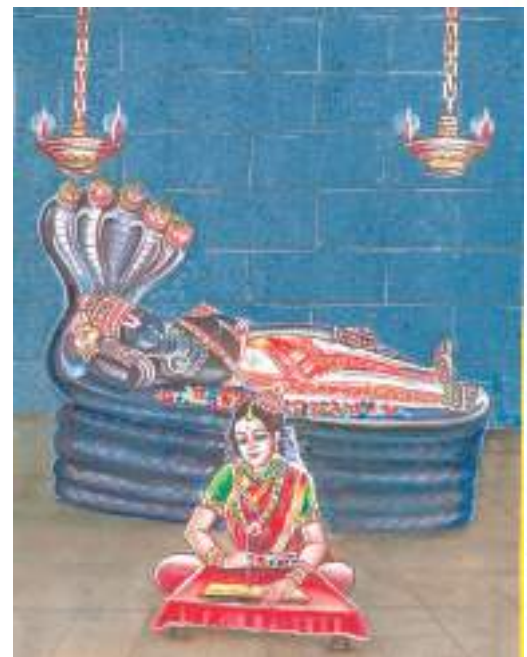
प्रातःसमय में गोदादेवी अपनी एक-एक सहेली के घर जाकर उन्हें जगाती हुई, उन्हे नदी में नहाने के लिए ले जाने तैयार होती है। विष्णु के अवतारों की प्रशंसा करती हैं।

बाद के पाँच पाशुरों में गोदादेवी अपनी सहेलियों से मिलकर देवालय का दर्शन करने का वर्णन है। गोदा भगवान को उठाने के लिए सुप्रभात का आलापना करती है। मंदिर रक्षकों से अनुमति लेकर मंदिर के अंदर जाती है और कृष्ण के माता-पिता से बलराम और कृष्ण को उठाने की प्रार्थना करती है। उसके बाद वे सब कृष्ण के अष्ट सखियों में एक नीलादेवी का दर्शन करके प्रार्थना करती हैं।

अंतिम नौ पाशुरों में गोदादेवी भगवान के महिमाओं का वर्णन करती है। अंतिम तीसवीं पाशुर में गोदादेवी इस प्रकार वर्णन करती है कि वह विष्णुचित्त की पुत्री गोदा, इन तीस पाशुरों की रचना करके गायन किया है। जो भी इनको भक्ति और श्रद्धा से गान करेंगे उन्हे जरूर भगवान की कृपा प्राप्त होगा।

गोदा का व्रत समाप्ति के बाद भगवान रंगनाथ विष्णुचित्त को आदेश देता है कि वह गोदा को दुल्हन बनाकर मंदिर में ले आने से रंगनाथ उससे शादी करेगा। भगवान के आदेश के अनुसार विष्णुचित्त ऐसा ही करता है तो कहा जाता है कि सब के आँखों के सामने गोदा स्वामी की मूर्ति के पास जाकर उसमें लीन हो जाती है। इसके याद में आजकल भी इन तीस दिनों के बाद इकतीसवा दिन हर वैष्णव मंदिर में भगवान रंगनाथ से गोदा कल्याण करते हैं।

भगवान बालाजी से गोदादेवी का संबंध

गोदादेवी के कई नाम हैं जैसे आंडाल, चूडिकोडुत्त नाच्चियार और आमुक्तमाल्यदा। 'आमुक्तमाल्यदा' का अर्थ है फूलमाला को खुद पहनकर बाद में भगवान की पूजा में समर्पण करनेवाली। श्रीरंगनाथ को गोदा की मालाएँ इतना प्रिय है कि आज भी हजारों साल बाद कलियुग का अवतार माने जानेवाला तिरुमल बालाजी के हर ब्रह्मोत्सव में श्रीविल्लिपुत्तूर (गोदा का जन्म स्थान) से भगवान को पहनाने

के लिए मालाएँ भेजी जाती हैं। गरुडसेवा के दिन श्रीविल्लिपुत्तूर से गोदादेवी की तरफ से भेजी गई मालाओं को पहनकर भगवान मलयप्पा भक्तों को दर्शन देते हैं।

तिरुमल में बालाजी को रोज सुप्रभात सेवा करते हैं लेकिन अगहन में सुप्रभात के बिना आंडाल के पाशुरों को गाकर जगाते हैं। इस तरह तिरुमल से गोदा का संबंध लागू हो रहा है।

कर्कटे पूर्व फल्गुन्याम् तुलसी काननोद्भवाम्।
पांड्ये विश्वंभराम गोदां वंदे श्रीरंगनायकीम्।।
श्रीमते विष्णुचित्तार्य मनोनंदन हेतवे।
नंदनंदना सुंदर्यै गोदायै नित्य मंगलम्।।

एक कथन के अनुसार भगवान विष्णु श्रीकृष्णदेवराय जो महान विष्णु भक्त और प्रसिद्ध राजा था उन्हे सपने में दर्शन देकर आदेश दिया कि मुझे अत्यंत प्रिय गोदादेवी की कहानी को तुम तेलुगु भाषा में लिखना। तब श्रीकृष्णदेवराय ने उस आदेश के अनुसार गोदा की कहानी को 'आमुक्तमाल्यदा' नाम से रचना किया और उस ग्रंथ को भगवान तिरुमल बालाजी को अर्पण किया।

''आंडाल तिरुवडिगले शरणम''

भक्तिप्रदं उत्तरायणं

- श्री वेमुनूरि राजमौलि

संक्रांति का त्यौहार किसानों का है। फसल हाथ लगने के समय, प्रत्येक ग्राम पुलकित होता है। घरों के आँगन रंगवल्लियों से सज जाते हैं; घर में तरह तरह के पकवान बनते हैं; आकाश में पतंगें उड़ती हैं; बसवन्नलु (साँड) के खेल; हरिदासों के कीर्तन हमें मन्त्रमुग्ध कर देते हैं। संक्रांति का संरंभ कहा नहीं जा सकता। संक्रांति का यह संरंभ चार दिनों तक बना रहता है। प्रथम दिन को 'भोगी', द्वितीय दिन को 'मकर संक्रांति', तृतीय दिन को 'कनुमा' तथा चतुर्थ दिन को 'मुक्कनुमा' के रूप में मनाया करते हैं। उत्तरायण-पुण्यकाल का प्रारंभ संक्रांति से ही होता है। ''सरति चरतीति सूर्यः'' याने संचरण करनेवाला सूर्य। भास्कर का संचार दो तरह का होता है। पहला उत्तरायण और दूसरा दक्षिणायन। हमारा, पूरा संवत्सर का काल देवताओं के लिए एक रोज है। 'अयने दक्षिणे रात्रिः उत्तरेतु दिवा भवेत्'' - अर्थात् छः मासरों का उत्तरायण काल देवताओं के लिए दिन और दक्षिणायन का काल रात्रि है।

सत्यनिष्ठा, मानव-धर्म के रूप में बनकर रहना चाहिए। मृत्यु किसी भी क्षण, बिना सोचे हमारे पास आने की तैयारी में रहती है। किसी भी समय आ धमकने वाली मृत्यु से न डरकर धर्म का आचरण करना, मानव का धर्म है; ऐसा आर्ष वाक् है। वायदे पर न छोड़कर दैव व धर्म-कार्यों का आचरण तुरन्त करना चाहिए। दिन का समय; उत्तरायण में दैवी शक्तियाँ जागरूक रहती हैं। पुण्य-कार्यों तथा दान धर्मों के लिए उचित काल है। कुरुक्षेत्र संग्राम में शर-शय्या पर शिथिल गिर पड़ने पर भी भीष्माचार्यजी ने स्वच्छन्द मरण के वर-प्रसाद से उत्तरायण काल के आने तक अपना अन्तिम श्वास नहीं छोडा। अपनी आँखें सदा के लिए मूँदने से पहले उन्होंने धर्मराज को श्रीविष्णुसहस्र नामों का उपदेश किया। धार्मिक चिन्तन के लिए उत्तरायण पुण्यप्रद है; ऐसा कहने के लिए यह, एक निदर्शन है। पितृ कार्यों के लिए उत्तरायण विशिष्ट स्थान रखता है। इस काल में मरने वालों को परमपद प्राप्त होता है; ऐसा कुछ लोगों का विश्वास है।

नक्षत्र सत्ताईस हैं। प्रत्येक नक्षत्र के चार पाद (चरण) होते हैं। नौ चरणों की एक राशि होती है। इस तरह बारह राशियाँ एक सौ आठ (१०८) पादों में व्याप्त हुई हैं। इन राशियों द्वारा सूर्य की यात्रा गुजरती रहती है। सूरज के एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करने को संक्रमण कहते हैं। इस तरह वर्ष में बारह संक्रमण हुआ करते हैं। इनमें से ''मकर संक्रमण'' उत्कृष्ट स्थान रखता है। मकर संक्रमण से भास्कर का गमन उत्तर दिशा की ओर होता है। उत्तर की दिशा, मोक्ष-प्राप्ति को सूचित करती है। इसीलिए उत्तरायण पुण्यकाल मोक्ष-साधन के लिए अनुकूल है, ऐसा बुजुर्ग लोग कहते हैं। मकर संक्रमण

के बाद वातावरण में स्पष्ट परिवर्तन दृष्टि गोचर होते हैं। तब तक कंपकंपाने वाली ठंड, आहिस्ता-आहिस्ता कम होती रहती है। सम-शीतोष्ण स्थिति उत्पन्न होती है। इतनी विशेषताओं से भासित उत्तरायण में आनेवाली संक्रांति, तेलुगुवालों के लिए अत्यन्त प्रिय पर्व है, विशिष्टता को प्राप्त आकर्षणीय पर्व है। इस पर्व-दिन के आचरण के अवसर पर, खाये जाने वाले पदार्थों के पीछे वैज्ञानिक-प्रामुख्यता भी छिपी हुई है। शरीर को उचित उष्ण(गरमी), चरबी की आवश्यकता होती है। अतः तिल, गुड़ आदि से बने पकवानों का उपयोग किया करते हैं। इनके द्वारा शीतकाल में शरीर में घटित परिवर्तन संभाल जाते हैं।

हमारी संस्कृति के प्रत्येक पर्व के सारांश के पीछे दूसरों को भलाई पहुँचाने की भावना छिपी हुई है। फसल घर आने के समय आनेवाला संक्रांति-पर्व भी उसी तरह का है। किसान अपने खेत में काम करने वाले मजदूरों और जरूरतमंदों में आत्मीय भावना से यथाशक्ति दान बाँट दिया करते हैं। इसी वक्त गाँव-गाँव फेरी लगाने वाले (फिरने वाले) हरिदास, गंगिरेद्दुलवाल्लु (साँड को साथ लेकर खेलाते, मनोरंजन पैदा करते, भिक्षाटन करनेवाले), बुडुबुडुक्कुला वाले (छोटा डमरु हाथ में लेकर बजाते भविष्य बताने वाले फकीर लोग) घर पर आते हैं तो उचित रीति से कुछ न कुछ समर्पित कर लेते हैं। इतनी विशेषताओं को समेट लेकर आनेवाली संक्रांति से प्रारंभ होनेवाला उत्तरायण-पुण्यकाल समस्त मानवालि के लिए पुण्यप्रद है।

खेतीबाड़ी से ओत-प्रोत त्यौहार, संक्रांति है। यह चार दिनों का पर्व है। दूध-फसल तथा मनुष्यों के बीच जो अनुबंध बना हुआ है, बताता है यह त्यौहार। पहला दिन 'भोगी' है। श्रीरंगनाथ ने गोदादेवी से विवाह रचकर भोग-भाग्य (सुख-संतोष) प्रसादित किया। इसलिए 'भोगी' नाम प्रसिद्ध हुआ। भोगी के दिन तड़के ही भोगि-पिडकलु (गोबर से बने उपलों से) से आग तैयर करके उन ज्वालाओं में अगर घर में कोई काम न आने वाला सामान हो, तो डाल देते हैं। पुरानी पीडाओं से मुक्ति पाकर नूतनता का स्वागत करना इसका अंतरार्थ है। उसी दिन शाम को बच्चों के ऊपर से भोगी-फल (बेर के फल) डाला करते हैं। विष्णुमूर्ति को पसन्द आनेवाले बेर सिर पर से डालने से बच्चों को श्रीमन्नारायण का अनुग्रह प्राप्त होगा; ऐसा लोगों का विश्वास है।

दूसरा दिन 'संक्रांति' है। प्रत्येक घर धान्य-राशियों से भरे रहने की चाह करने का त्यौहार है यह। कुछ प्रान्तों में गौरी देवी की पूजा संपन्न करके हल्दी व कुंकुम सुहागिनियों में बाँटने का संप्रदाय है। इस दिन प्रत्येक घर का आँगन रंगवल्लियों से शोभित होता है। अपना घर सदा दूध-फसलों से भरा रहे, ऐसी कामना करते दूध औटाते हैं। घर के प्रधान द्वार के सामने गाय के गोबर से बने उपले जला कर, उस आँच पर (अग्नि-ज्वाला पर) मिट्टी के बरतन में दूध डालकर रख देते हैं। दूध उफडने के बाद, उस दूध से पायस (पय से पकाया गया अन्न) बना कर ईश्वर को निवेदित करते हैं।

तीसरा दिन ''कनुमा'' है। यह किसानों का त्यौहार है। लोग पशु-शालाओं की सफाई करते हैं। पशुओं को सजाकर उनकी पूजा संपन्न करते हैं। पशु-शाला में ही ''पोंगलि'' (दूध-डाल कर पकाया गया अन्न) पकाकर भगवान को चढ़ाते हैं। इसके पश्चात् उस पोंगलि को खेतों में छिड़काते हैं। इस तरह करने से अच्छी फसल होगी, ऐसा लोगों का विश्वास है।

कनुमा के बाद के दिन को ''मुक्कनुमा'' मनाते हैं। इस दिन नव विवाहिता स्त्रियाँ ''सावित्रि-गौरी व्रत'' का आचरण करती हैं। याने खिलौनों के व्रत का आचरण करती हैं। मिट्टी की प्रतिमाओं का दरबार रचाकर, उन्हे देवता मान कर नौ दिनों तक पूजा संपन्न किया करती हैं।

नौ दिन पूरे होने के बाद मिट्टी की प्रतिमाओं का निमज्ज्न, पुण्य तीर्थों में किया करती हैं। मुक्कनुमा के दिन जो ''सावित्रि-गौरी व्रत'' का आचरण करती हैं, उन्हें सौभाग्य प्राप्त होता हैं, ऐसा विश्वास किया करते हैं।

शुभमस्तु

तेलुगु मूल - संपादक।

साभार - आन्ध्रज्योति (दैनिक)।

मकर संक्रांति महापर्व

- श्री ज्योतीन्द्र के. अजवालिया

धनुर्मास की अंतिम तिथि को हम मकर संक्रांति कहते है। इस पवित्र दिन में सूर्य धनुराशि से मकर राशि में प्रवेश करता है। ज्योतिषशास्त्र के अनुसार प्रमुख ग्रह सूर्यदेव है। सूर्यदेव हर एक राशि में एक एक मास तक रहता है। एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करता है इस घटना को हम संक्रांति कहते है। संक्रांतिकाल बहुत पवित्र माना जाता है। मकर संक्रांति को उत्तरायण भी कहा जाता है। भारतवर्ष में हर प्रांत में यह उत्सव बडी धूमधाम से मनाये जाते है। ये सांस्कृतिक पर्व भी है। गुजरात और महाराष्ट्र में मकर संक्रांति और उत्तरायण, पंजाब, हरियाणा में लोरी, तमिलनाडु में पोंगल और कर्णाटका में संक्रांति के नाम से ये पर्व प्रचलित है।

संक्रांति माहात्म्य और उत्तरायण

सूर्य धनुराशि से मकर राशि में प्रवेश करता है इसलिए ये पर्व मकर संक्रांति के नाम से प्रचलित है। विशेष में सूर्य की गति उत्तर की ओर रहती है इसलिये उत्तरायण भी कहा जाता है। जिस तरह एक मास में दो पक्ष है, एक शुक्ल पक्ष और दूसरा कृष्ण पक्ष, इस तरह वर्ष का भी दो पक्ष में विभाजन किया जाता है। १४ जनवरी से लेकर छः मास तक उत्तरायण इसके बाद छः मास दक्षिणायन कहा जाता है। शास्त्र में वर्णन है कि, मकर संक्रांति से छः मास तक उत्तरायण में स्वर्ग के द्वार खुले रहते है। ब्रह्मसूत्र में बताया है कि, उत्तरायण में मृत्यु होती है ये जीवात्मा सदा के लिए वैकुंठ में विराजते है और मुक्तिपद प्राप्त करता है। उत्तरायण का छः मास का समय देवतागण का दिवस रहता है,

भगवान बालाजी का कृपा-कटाक्ष,
आशीर्वाद आप और अपने परिवार
पर सदा भरपूर रहने के लिए
सप्तगिरि की ओर से लेखक-लेखिकाओं,
एजेंटों एवं पाठकों को
नूतन वर्ष-२०१९ और संक्रांति का
'हार्दिक शुभकामनाएँ'।

- प्रधान संपादक

दक्षिणायन देवतागण की रात्रि होती है इसलिये दक्षिणायन में जिनकी मृत्यु होती है ये जीवात्मा स्वर्गसुख के बाद पुनः इस संसार में जन्म लेते है। इस बात का समर्थन भगवान श्रीकृष्ण ने गीताजी में दिया है।

अग्निर्ज्योतिरहः शुक्लः षण्मासा उत्तरायणम्।
तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्म विदो जनः।। (अध्याय ८-२४)
धूमो रात्रिस्तथा कृष्णः षण्मासा दक्षिणायनम्।
तत्र चान्द्रमासं ज्योतिर्योगी प्राप्य निवर्तते।। (अध्याय ८-२५)

अर्थात् उत्तरायण से मुक्तिपद प्राप्त होता है और दक्षिणायन से पुनर्जन्म प्राप्त होता है। महाभारत के युद्ध से पीडित भीष्म, बाणशैय्या पर सो रहे थे, ये समय दक्षिणायन का था, भीष्मजी मुक्तिपद चाहते थे और इच्छा मृत्यु का वरदान भी था, ये समय में पीडित भीष्म ने धर्मराज युधिष्ठिर को मुक्ति का और धर्म का ज्ञान बताया। परमतत्त्व का भी परिचय दिया। कलियुग जीव की मुक्ति के लिये भी परमतत्त्व, उपाय और फल का ज्ञान दिया। जब मकर राशि में सूर्य ने प्रवेश किया उत्तरायण का शुभ समय आया तब भीष्म ने अपनी आत्मा को देह से मुक्त किया और ऊर्ध्वगति से वैकुंठ में चले गये। इस घटना से मकर संक्रांति और उत्तरायण पर्व का महत्त्व विशेष हो गया।

उत्तरायण पर्व में सूर्य उपासना

उत्तरायण पर्व में सूर्य उपासना बहुत मंगलकारी और शुभदायक है। सूर्यदेव एक ही ऐसा देवता है की हम सब लोग अपनी आँखों से देख सकते है, इस का अनुभव भी कर सकते है, ये प्रत्यक्ष देवता है। इसलिए प्रत्येक दिन प्रत्यक्ष देवता की उपासना करने का विधान है। उत्तरायण के पवित्र दिन सूर्योदय के पहले तुलसी मिश्रित जल से पवित्र स्नान करके, धवल वस्त्र धारण करके, घर के पूजा स्थान में चावल के आटा से रंगोली सजा के इसके ऊपर सूर्यदेव की प्रतिमा स्थापित करे और षोडशोपचार से सूर्यदेव का पूजन अर्चन करे। अंत में सूर्यमंत्र से जप पाठ करने का विधान है।

कलियुग जीव को, भीष्म की ओर से श्रीविष्णुसहस्रनाम भेंट - धर्मराज युधिष्ठिर के प्रश्नों के उत्तर में भीष्म ने ज्ञान दिया की ''श्रीहरि विष्णु परमतत्त्व है, इनका नामस्मरण ही हमारा उपाय है, और नामस्मरण से जीवात्मा को मुक्ति मिलती है, यह फल है।'' ऐसा ज्ञान दे के विष्णुजी का सहस्त्र नाम बताया। इस तरह भीष्म ने कलियुग जीवों के उद्धार के लिए श्रीविष्णुसहस्रनाम भेंट किया।

सूर्यमंत्र

जपा कुसुम संकाशम् काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोरिं सर्व पापघ्नं प्रणतोस्मि दिवाकरम्।।

बीजमंत्र *- ह्रीं आदित्याय नमः*

विशेष में तांबा कलश में शुद्ध जल भर के, इस में चंदन, लाल पुष्प, चावल, तिल और अष्टगंध द्रव्य मिश्रित करके सूर्यदेव को अर्घ्य प्रदान करने से सूर्यदेव अतिप्रसन्न होते है। इस के फल स्वरूप हमें शारीरिक, मानसिक रोगों से मुक्ति मिलती है और हमें तेजस्विता प्रदान होती है, सूर्य उपासना करने से हमें ग्रहदोष पीडा में से मुक्ति मिलती है। विशेष में सुख-शांति-विद्या-धन ऐश्वर्य और उन्नती की प्राप्ति होती है।

संक्रांति पर्व में पितृ आराधना उत्तम

सूर्य धनुराशि से मकरराशि में प्रवेश करता है इस संक्रांति काल में पितृ आराधना विशेष फलदायी बनती है, ताम्र कलश में साकर मिश्रित जल भर के, पीपल के पेड़ को अर्पण करने से पितृगण बहुत प्रसन्न होते है। इसके अतिरिक्त, पितृदेव की प्रसन्नता हेतु दान-पुण्य कर्म करने का भी विधान है। प्रसन्न पितृ हमारे घर परिवार में सुख एवं शांति प्रदान करते है।

संक्रांति काल में दान - पुण्य का महत्व

खलु यग्नै विवाहे संक्रांतो ग्रहणी तथा।
पुत्र जन्मे व्यतिपाते दत्तं भवतुं चाक्षयः।।

संक्रांति पर्व और पतंगोत्सव का रहस्य

इस पवित्र पर्व में लोग रंगीन पतंग छत से आकाश में उडाते है। इसका अर्थ यह हुआ की, पतंग उड़ा ने के लिये हम उंचाई पे जाना पड़ता है। इसी तरह प्रभु तक पहुँचने के लिये हमें तन की और मन की पवित्रता बनानी पडती है ऐसी ऊँचाइ प्राप्त करनी पडती है।

इस पर्व से हम ऐसी सीख ले की, हमारा देह रूपी पतंग अंत में ऊर्ध्वगति करे। जीवन रूपी पतंग कटने से फिर से इस संसार में वापस न आये और उडते पतंग की तरह हमें ऊर्ध्वगति प्राप्त हो यही पतंगोत्सव का हार्द है। जीवात्मा की लीला विभूति में से नित्य विभूति (वैकुंठ) में गति को, हम आत्मा की संक्रांति कहते है। यही संक्रांति पर्व का रहस्य है।

अर्थात् यज्ञ में, विवाह हस्त मेलाप समय में, संक्रांति काल में, ग्रहण समय में, पुत्र जन्म समय में, (नाड छेदन के पहले), व्यतिपात समय में जो भी दान पुण्य कर्म होते है वो अक्षयपात्र बन जाते है। शास्त्र में बताया है कि षड्शीत संक्रांति का दान छयासीगुना फल देता है। विष्णुपदी संक्रांति का दान-पुण्य लाखगुना फल देता है और मकर संक्रांति में किया गया दान-पुण्य से हमें अक्षयगुना फल प्राप्त होता है। इस पर्व में अपने कल्याण हेतु वस्त्रदान-ऋतुकाल के अनुसार सब्जी, फल, चावल, दाल, तिल, गुड, गन्ना, कंवल इत्यादि दान देने का विधान है।

दान पुण्य का संबंध, धर्म-आचार और आरोग्य के साथ

उत्तरायण में तिल और गुड का दान देने का बडा महत्व है। कथा ऐसी है कि सूर्य के शाप से निर्धन शनिदेव और सूर्यपत्नी छाया के पास रूठे हुए सूर्यदेव आये।

तब निर्धन शनिदेव के पास तिल और गुड के सिवा कुछ भी नही था। शनिदेव ने सूर्यदेव को तिल और गुड अर्पण किया, तब सूर्यदेव अति प्रसन्न हुआ। इसलिए इस उत्तरायण पर्व में सूर्य प्रसन्नता हेतु तिल, गुड का दान करने का महत्त्व है। इस शरदी की मौसम में तिल और गुड का सेवन आरोग्यप्रदान करते है। तिल उष्णवर्धक है और गुड पुष्टिवर्धक है। शरीर की पुष्टी के लिए आयरन, केल्शीयम, फोस्फरस ये सब तिल में से हमें मिलता है। गुड से जीर्ण शक्ति बढती है, पित्त रोग से मुक्ति मिलती है, इसलिए तिल-गुड के दान के साथ उसका सेवन करने का भी बडा महत्त्व है।

जय श्री मन्नारायण...

- श्री गोविंद मधुसूदन रांदड

रामानुज पदच्छाया गोविन्दाह्वानपायिनी।
तदायत्तस्वरूपा सा जीयान्मद्विश्रमस्थली।।

अवतार स्थल - मधुरमंगलम

तिरुनक्षत्र - पुष्य मास पुनर्वसु

आचार्य - श्री शैलपूर्ण स्वामीजी

शिष्य - पराशर भट्टर, वेदव्यास भट्टर

परमपद प्रस्थान स्थल - श्रीरंगम्

रचना - विज्ञान स्तुति, एम्पेरुमानार वडि वळगु पाशुर (पंक्ति)

अवतार

श्री गोविन्दाचार्य कमलनयन भट्टर और द्युतिमती के पुत्र हुए। इनका अवतार मधुरमंगलम में हुआ। ये श्री रामानुजस्वामीजी के मौसेरे भाई भी हैं। गोविन्द भट्टर, गोविन्ददास, गोविन्द पेरुमाळ, एम्बार और रामानुजपदच्छाया के नामों से भी जाने जाते हैं।

वार्षिक तिरुनक्षत्र (२०.०१.२०१९) के संदर्भ में...

श्री रामानुजस्वामीजी की रक्षा

एक दिन यादवप्रकाश ने रामानुजाचार्य का छल से वध करने हेतु गंगा स्नान के लिए प्रयाग चलने के लिए आमन्त्रित किया। माता से आज्ञा लेकर श्री रामानुजाचार्य यादवप्रकाश के साथ चल दिये। श्री गोविन्दाचार्यजी को यादवप्रकाश की योजना का पता था, अतः रामानुजाचार्य की रक्षा करने हेतु वे भी साथ में चल गये। गोविन्दाचार्य ने रामानुजाचार्य को बताया, ''भैय्या! गंगा स्नान के बहाने आपको मारने के लिये लेके जा रहे हैं, अतः आप यहाँ से निकल जाना चाहिए। श्री रामानुजाचार्य वहाँ से यादवप्रकाश का साथ छोडकर निकल गये।

श्री शैलपूर्णाचार्य स्वामी का गोविन्दाचार्यजी को श्रीवैष्णव बनाना

श्री गोविन्दाचार्य माया से प्रभावित होकर श्रीकालहस्ति में शिव आराधना करने लगे थे। उनके उज्ञीवनार्थ रामानुजाचार्य श्री शैलपूर्णाचार्य को पत्र लिखे। श्री शैलपूर्णाचार्य कुछ शिष्यों के साथ श्रीकालहस्तिपुर के लिये प्रस्थान किये। जिस जलाशय में गोविन्दाचार्य प्रतिदिन शिव आराधना के लिए जल लेने आते थे उस सुवर्ण मुखरी जलाशय के किनारे श्री शैलपूर्णाचार्य स्वामीजी सहस्रगीति का कालक्षेप सुनाने लगे। वहीं शिवजी की सेवा के लिये पुष्प चुनने गोविन्दाचार्य आये और १४ वें गाथा में सुनें, ''जिन भगवान विष्णु के नाभि कमल से ब्रह्म उत्पन्न होते हैं, जो चराचर समस्त जगत् के एकमात्र कारण हैं, जो समस्त

कल्याणगुणगुणाकर अखिलहेय प्रत्यनीक दो चिन्हों को धारण करते हैं उनको छोड़कर दूसरे देवता की पूजा के लिये पुष्प चयन उचित नही है।''

तत्पश्चात् श्री शैलपूर्णाचार्य ने आलवन्दार स्तोत्र का एक श्लोक ''स्वाभाविकानवधिकातिशयेशितृत्वं नारायणः त्वयिन मृष्यति वैदिक कः ब्रह्मा शिवः शतमखः परमस्वराड़ित्येतेऽपि यस्य महिमार्णवविप्रुषस्ते'' लिखकर गोविन्दाचार्य के मार्ग में डाल दिया। इस श्लोक से गोविन्दाचार्य अत्यन्त प्रभावित हुये तथा उनमें जिज्ञासा जागृत हुयी। उनका श्री शैलपूर्णस्वामीजी के साथ संवाद हुआ। संवाद में निरुत्तर होकार गोविंदाचार्य ने त्वरित उन पुष्पों को फेंककर श्री शैलपूर्णाचार्य स्वामीजी के चरणों में गिरकर कहने लगें, ''मैं भटक गया हूँ।''

इतर शिवभक्तों ने बुलाने पर भी गोविन्दाचार्य उनके साथ नही गये। उन शिवभक्तों ने श्री शैलपूर्णाचार्य स्वामीजी का विरोध किया। उसी रात्रि में शिवजी उन शिवभक्तों के स्वप्न में आकर यह आदेश दिये की,''आज पृथ्वी पर शेषजी के अंश से रामानुजाचार्य, गरुडजी के अंश से गोविन्दाचार्य और पाञ्चजन्य के अंश से दाशरथि अवतार लिये हैं।''

यह बात शिवभक्तों ने श्री शैलपूर्णाचार्य से क्षमा याचना करते हुए सहर्ष उन्हें गोविन्दाचार्य को सौंप दिया। तत्पश्चात् श्री शैलपूर्णाचार्य स्वामीजी श्री गोविन्दाचार्य का विधिवत् पञ्चसंस्कार करके, सहस्रगीति का अध्ययन कराकर अर्थपंचक विज्ञान को बतलाये।

श्री गोविंदाचार्य की जीव दया

एक बार रामानुजाचार्य ने गोविन्दाचार्य को साँप के मुँह में हाथ डालते देखा। पूछ ने पर उन्होंने बताया की उस साँप के जीभ में काँटा गड गया था वह निकालने के लिये मुँह में हाथ डाला। इतनी महती दया भाव देखकर रामानुजाचार्य अत्यन्त प्रसन्न हुये।

श्री गोविन्दाचार्यस्वामीजी की आचार्य निष्ठा

१. एक बार कुछ श्रीवैष्णव गोविंदाचार्य की स्तुति कर रहे थे और गोविंदाचार्य उस स्तुति का आनन्द लेते हुए श्री रामानुजस्वामीजी की नज़र में आए। श्री रामानुजस्वामीजी ने उन्हे बताया की अपनी प्रशंसा कभी स्वीकार नहीं करनी चाहिए और अपने आप को तुच्छ समझना चाहिए। श्री गोविंदाचार्य ने उत्तर दिया की किसी ने उनकी स्तुति की तो वो स्तुति उन्हें नहीं बल्कि रामानुजस्वामीजी को जाती हैं क्योंकि श्री रामानुजस्वामीजी से ही उन्हे सबकुछ प्राप्त हुआ है। श्री रामानुजस्वामीजी उनके वचन स्वीकार करते हैं और उनकी आचार्य निष्ठा की प्रशंसा करते हैं।

२. पेरियाळ्वार तिरुमोळि के अंतिम पाशुर का अर्थ श्रीवैष्णव उनसे पूछते हैं तो वें अपने को अज्ञानी बताकर श्री रामानुजस्वामीजी के श्रीपाद अपने मस्तक पर धारण करते हैं और उस पाशुर का अर्थ प्रकाशित करते हैं।

३. श्री रामानुजस्वामीजी एक बार सहस्रगीति के अर्थ को स्मरण करते हुये टहल रहे थे। उन्हे देखनी मात्र से श्री गोविंदाचार्य स्वामीजी ने श्री रामानुज स्वामीजी किसका ध्यान कर रहे थे यह जान लिया। इससे यह समझ आता है की श्री गोविंदाचार्य स्वामीजी अपने आचार्य के चिंतन में दिन-रात रहते हैं।

४. एक बार जब श्री रामानुजस्वामीजी श्री शैलपूर्ण स्वामीजी के दर्शन के लिए पधारे तो श्री रामानुजाचार्य ने देखा की गोविन्दाचार्य श्री शैलपूर्णाचार्य की शय्या लगाकर उस पर प्रथम स्वयं सो लेते हैं। उनसे पूछने पर उन्होने बताया की गुरु की शय्यापर सोने का फल नरक होता है, परंतु मेरे द्वारा लगाई गयी शय्यापर गुरुदेव को रात्रिभर बिना किसी क्लेश के अच्छी नींद आये तो मुझे नरक ही हो तो हानि नहीं।

श्री गोविंदाचार्य का आचार्य विरह

श्री रामानुजाचार्य ने श्रीरंगम् के लिये प्रस्थान करते समय गोविन्दाचार्य को शैलपूर्ण स्वामीजी से माँगकर साथ

लेलिया। एक बार गुरु के विरह में गोविन्दाचार्य के सूखे हुये अंगों को देखकर यतिराज ने उन्हे श्री शैलपूर्णाचार्य का दर्शन करके आने के लिये कहा। श्री शैलपूर्णाचार्य स्वामीजी ने उन्हे दर्शन न देकर रामानुजाचार्य की सेवा में ही पूर्णनिष्ठा भाव से रहने की कठोर आज्ञा दी। फिर गोविन्दाचार्य श्रीरंगम् लौट आये। गुरुदेव की सेवा ही भगवत सेवातुल्य माननेवाले श्री गोविन्दाचार्यजी श्री शैलपूर्णाचार्य स्वामीजी का स्मरण करके उनके समान ही श्री रामानुजाचार्य में श्रद्धा रखते हुये अनन्य भाव से उनकी अहर्निश सेवा करने लगे।

श्री गोविन्दाचार्य की विरक्ति और सन्यास ग्रहण

एक बार गोविन्दाचार्य की माँ आकर उनसे कहने लगी की अब तुम्हारी पत्नी ऋतुमति हुयी है अतः तुम घर चलो। यतिराज की सेवा में संलग्न गोविन्दाचार्य नही माने तो उनकी माँ ने यह बात रामानुजाचार्य से बताई। रामानुजाचार्य ने उन्हे आश्रम धर्म का पालन आवश्यक बताते हुये पत्नी के साथ अंधकार में एकान्तवास करने की आज्ञा प्रदान की। गुरु आज्ञा पाकर घर तो आगये किन्तु पत्नी के साथ रात्रिभर ज्ञान वैराज्ञ की बातें करते रहें। रामानुजाचार्य ने कारण पूछा तो गोविन्दाचार्य बोले की ''अन्तर्यामी भगवान के प्रकाश से रात्रिभर अन्धकार का नामोनिशान नही रहा।'' रामानुजाचार्य बोले की, ''आश्रमधर्म का पालन करना चाहिये। गृहस्थ धर्मोपयोगी भोग्य वस्तुओं में भोग्यता बुद्धि न करके कैंकर्य बुद्धि करनी चाहिए। अनाश्रमी पतित हो जाता है। यदि गृहस्थ आश्रम धर्म में विरक्ति हो गयी है तो आपको शीघ्र ही सन्यास लेना चाहिये।''

गोविन्दाचार्य के सन्यास के लिये प्रार्थना करने पर उनकी सन्यासाश्रम में निष्ठा देखकर रामानुजाचार्य ने उन्हे सन्यासाश्रम में दीक्षित किया। उनको ''मन्नाथ'' नाम से विभूषित किया। मन्नाथ यह रामानुजाचार्य का नाम होने से गोविन्दाचार्य ने इस नाम को स्वीकार नही किया। फिर रामानुजाचार्य ने मन्नाथ का ही पर्याय ''एम्बार'' यह नाम गोविन्दाचार्य को प्रदान किया। ❁

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति

लेखक लेखिकाओं से निवेदन

सप्तगिरि पत्रिका में प्रकाशन के लिए लेख, कविता, रचनाओं को भेजनेवाले महोदय निम्नलिखित विषयों पर ध्यान दें।

१. लेख, कविता, रचना, अध्यात्म, दैव मंदिर, भक्ति साहित्य विषयों से संबंधित हों।

२. कागज के एक ही ओर लिखना होगा। अक्षरों को स्पष्ट व साफ लिखिए या टैप करके मूलप्रति भेजें।

३. किसी विशिष्ट त्यौहार से संबंधित रचनायें प्रकाशन के लिए ३ महीने के पहले ही हमारे कार्यालय में पहुँचा दें।

४. रचना के साथ लेखक धृवीकरण पत्र भी भेजना जरूरी है। 'यह रचना मौलिक है तथा किसी अन्य पत्रिका में मुद्रित नहीं है।'

५. रचनाओं को मुद्रित करने का अंतिम निर्णय प्रधान संपादक कार्य होगा। इसके बारे में कोई उत्तर प्रत्युत्तर नहीं किया जा सकता है।

६. मुद्रित रचना के लिए परिश्रमिक (Remuneration) भेजा जाता है। इसके लिए लेखक-लेखिकाएँ अपना बैंक प्रथम पृष्ठ जिराक्स (Bank name, Account number, IFSC Code) रचना के साथ जोड करके भेजना अनिवार्य है।

७. धारावाहिक लेखों (Serial article) का भी प्रकाशन किया जाता है। अपनी रचनाओं का भेजनेवाला पता- **प्रधान संपादक,**
सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे.प्रेस कांपौन्ड, के.टी.रोड,
तिरुपति – ५१७ ५०७. चित्तूर जिला।

सूर्यदेव की भागेदारी

अग्निदेव पुरुष था और गंगामैया महिला थी। गर्भधारण एक महिला के लिए सर्व साधारण विषय है, सहज है और उसके लिए स्वाभाविक परिणाम है। इसलिए सहानुभूतिवश गंगादेवी ने अग्नि से गर्भस्थ पिंड को अपने गर्भ में ले तो लिया, मगर उसे उसने भी वहन नहीं कर पायी थी, क्योंकि

वह पिंड मामूली ऐसा-वैसा नहीं था। वह तो जगज्ज्वाल उद्दंड पिंड था।

गंगामाई को चलते-चलते लगा था कि वह एक पिंड को नहीं, बल्कि एक पहाड़ ढो रही है। अब उसके लिए उस पिंड को वहन करने की स्त्री-भर भी शक्ति न रह गयी है। इस कारण गंगा ने अपने गर्भस्थ पिंड को निकाल कर, अपने ही किनारे पर फूस की झाडियों में छोड़ दिया। और इस प्रकार गंगानदी के तट पर अपने गर्भस्थ पिंड से छुटकारा पाकर नदीमाँ अपने रास्ते आप बहती चली गयी।

पिंड वहाँ अनाथ बन कर पड़ा रहा। सूरज उग आया। सूर्य भगवान उस अनाथ पिंड को इस तरह फूस की झाडियों में निस्तेज पड़े रहना देखा। उसका कलेजा पसीज गया। उसने अंतर-नेत्र से परख लिया कि पिंड का वृत्तांत क्या है। उसने उस पिंड में असमान तेज फूँका और उसे अपनी किरणों से सेंका। सूरज की करुणार्द्र किरणों में सहज ही उस पिंड ने माँ के गर्भ की ममता पायी और क्रमशः शिशु में बदल गया।

छः माताओं से परवसिश

सूरज भगवान ने अपने किरण जालों से पिंड को शिशु में तो बदल डाला, मगर, उसका पेट भर न सका। कोई शिशु धूप की छटा पीकर थेडी ही पेट भर सकेगा।

शिशु को भूख लगी, तो वह रोया। उसी समय उस रास्ते से हो करके सप्तर्षियों की पत्नियाँ कहीं को जा रही थीं, जिन महा पतिव्रताओं ने शिशु का रुदन सुना। सुनते ही उन्होंने शिशु को ढूँढा। फूस की झाडियों में शुभ्र वसनों में लिपटा वह जगज्ञगेयमान शिशु दिखाई पड़ा, जिसे झट उठा कर माताओं ने एक छायादार पेड़ के नीचे लेगयीं।

आश्चर्य से उस शिशु को लेते ही उन सब महर्षियों की पत्नियों के स्तनों में दूध छलक आया और उनमें से अरुंधती को छोड़, सब के सब छहों माताओं ने एक साथ शिशु को स्तन्य पिलाने संसिद्ध बन गयीं, तो उस तेजोवान शिशु ने एक साथ छः मुख बना कर सब छः माताओं का पयःपान किया।

कृत्तिका नक्षत्र का उदय

शिव और पार्वतियों का वह शिशु बालक में बदल गया और बालक कुमार में परिवर्द्धित हो गया। सप्तर्षियों की पत्नियों ने ही उसकी परवरिश की। सप्तर्षियों की देख-रेख में कुमार की शिक्षा-दीक्षा हुई। उसने वेदशास्त्र का महा आकलन किया और आर्षधर्म का प्रबल समर्थक बना। साथ ही साथ उस कुमार ने उन्हीं महर्षियों के नेतृत्व में आयुध-चालन का सांगोपांग अध्ययन कर निष्णात बना।

कुमार उन सप्तर्षियों की पत्नियों को ही अपनी माताएँ समझता था। उनकी बड़ी कदर करता था। वह चाहता था कि वह इन माताओं को शाश्वत रूप दें। इसी क्रम में अपने को अपना स्तन्य देकर, पाल-पोसकर बड़ा करने वाली उन माताओं के सारी पवित्रता और पातिव्रत्य को मूल भाव बना कर, अपनी उद्धति से कुमारस्वामी ने उन माताओं के नाम पर, ''अग्निदैवत्व'' नाम से एक महान नक्षत्र की सृष्टि कर उन छहों माताओं को अंकित दिया। यही कृत्तिका नक्षत्र है, जो शैवों के लिए काफी महत्वपूर्ण होता है। लोगों का विश्वास है कि अरुंधती, धृवतारा आदि की तरह अग्निदैवत्व या कृत्तिका नक्षत्र आज भी आसमान में चमक रहा है।

कुमारस्वामी की उद्धति

शिव-पार्वती, अग्नि, गंगा, सप्तर्षि-पत्नियों का यह कुमार महशूर साबित हुआ। विशेष कर युद्धकला में उसने

निपुणता पायी। तरह-तरह के हथियार फेंकने व चलाने में काफी सिद्धहस्त बना।

कुमारस्वामी की बल-वीरता की बात सुन कर सुरराज इन्द्र उस पर युद्ध करने आया। दोनों के बीच घमासान लड़ाई हुई। इन्द्र ने कुमार पर वज्र का प्रयोग किया। वज्र के लगने के कारण कुमारस्वामी के वाम-पार्श्व से एक योध-वीर पैदा होकर आया, जिसका चेहरा बकरे का था। वज्र आदि अनेक आयुधों के प्रहार का कुमार पर कोई असर नहीं होता था, अतः इन्द्र ने अपना हार मान कर, अपनी पुत्री ''देवसेना'' से उसका विवाह कराया। ब्रह्मादी देवताओं ने कुमार को देवताओं का सेनापति नियुक्त किया था।

कुमारस्वामी ने अपनी बलोद्धति से शूरपद्मासुर, तारकासुर, महिषासुर आदि लोक-कंटक राक्षसों का वध कर, लोक रक्षा की।

शिवजी ने अपने पुत्र से कहा, ''कुमार! तुम भूलोक में प्रणवार्थ की व्याप्ति और शिव-महिमा का प्रचार-प्रसार करने के कार्य पर जन लो।'' अपने पिता की आज्ञा के पालन में कुमार भूलोक में मादिराजा और मादमांब का पुत्र बनकर जनम ले आया। उसका नाम 'चेन्नबसवड्'' था, जिसने कन्नड़ राज्य में शिव-भक्ति का प्रचार कर मशहूर हुआ।

कुमारस्वामी के प्रसिद्ध नाम

वह बालक शिव, पार्वती, अग्नि, गंगा आदि कइयों का पुत्र था, इसलिए ''कुमार'' नाम से विख्यात हुआ।

कुमार जब शिशु था, तो सप्तर्षियों की पत्नियाँ, अरुंधती के अलावा, छहों ने आकर अपना स्तन्य देने उद्युक्त हो गयीं। तब उस शिशु ने अपने छः मुँह बना कर, सब माताओं का एक साथ दूध पिया। अतः कुमारस्वामी ''षण्मुख'' कहलाया।

देवताओं के सेनापति होने के नाते वह ''देव सेनापति'' पुकारा गया। गंगा के गर्भ से हिमालयों के ढ़ालुओं में गंगानदी के तटवर्ती इलाके में फिसल कर फूसी-झाडों में गिर जाने के कारण कुमारस्वामी ''स्कंद'' कहलाया था।

इन्द्र आदि देवताओं को ब्रह्मदेव ने कुमारस्वामी के जन्म-वृत्तांत, परवरिश, पराक्रम आदियों से परिचय कराया था। ब्रह्म के द्वारा परिचित या विवरित होने के कारण स्कंद का नाम ''सुब्रह्मण्येश्वर'' पड़ा था।

सुब्रह्मण्य की महिमा

सुब्रह्मण्य की अपरंपार महिमा है। उसका बाल्यकाल काफी कष्ट साध्य होकर गुजरा था। गंगा, सूरज और सप्तर्षियों की पत्नियों ने उसका पालन-पोषण किया और बड़ा किया था। इस बीच में सुरराज इन्द्र ने उस बालक पर ''सप्त मातृकाओं'' को भेजा, जिन्होंने कुमारस्वामी को रोग-पीड़ित बना कर सताना चाहा था, मगर उस समय बालक कुमारस्वामी कठोर तपोध्यान में बैठा हुआ था, उसके समीप पहुँचते ही कुमार की तपोग्नि ने घेर कर खूब सताया, तो वे महिलाएँ त्रस्त होकर श्रीस्वामी की ही शरण में गयीं और रक्षा पायीं। अतएव, कुमारस्वामी बाल-ग्रहों द्वारा पीड़ित बालकों की रक्षा करता है। जो कोई बालक बालग्रह-पीड़ित होने पर, श्रीस्वामी के सन्निधान में लाये जाने पर, स्वस्थ बन जाने की, आज भी, प्रथा है। लोग अपने जीवन में स्थिरता के लिए श्री सुब्रह्मण्यस्वामी के मंदिर में जाकर मिन्नत माँगते हैं, तो स्वामी उन्हें स्थिर जीवन-सिद्धि देकर, रक्षा करता है।

उपसंहार

कलियुग-वैकुंठधाम तिरुपति से करीब ७० कि.मी. की दूरी पर ''तिरुत्तणी'' नामक पुण्यक्षेत्र है। तिरुत्तणी ही प्राचीन काल में ''श्रीतीर्थ'' नाम से बहु विख्यात तीर्थस्थल था। यही तिरुत्तणी हमारे कथानायक कुमारस्वामी, सुब्रह्मण्यस्वामी, षण्मुगस्वामी, स्कंद, देव-सेनापतिजी का प्रधान आवास स्थान है। तिरुत्तणी एक ऊँचे विशाल पहाड़ पर निर्मित एक यात्रास्थल है, जहाँ हजारों की तादाद में यात्री श्रीस्वामी के दर्शन कर तर जाते हैं।

हर साल तमिल आडिमास के कृत्तिका-नक्षत्र के शुभारंभ के उपलक्ष के मंगल पर्वदिन के अवसर पर, तिरुत्तणी नगरी उत्सव के उमंग में झूम जाता है। ''आडिकृत्तिका'' ''श्री सुब्रह्मण्येश्वरस्वामी'' के महान् कर्तृत्व वैभव के चिह्न में बड़े उत्साह एवं उल्लास के साथ समूचे दक्षिणी भारत में मनाया जाता है। उस दिन दक्षिण भारत के कोने-कोने से भक्तजनों का तिरुत्तणी में ताँता लग जाने की प्रथा है।

श्री सुब्रह्मण्यस्वामी गुड़ और शर्करा के प्रिय हैं। आडिकृत्तिका के पर्वदिन मिन्नत माँगे हुए लोग बाँस की टोकरियों में गुड़ ला करके श्रीतीर्थ (तिरुत्तणी) की पुष्करिणी में समर्पित करके, अपनी मिन्नत पूरा करते हैं।

कुमारस्वामी का जीवन कष्टों का ही प्रतीक है। स्वामी ने कष्टों से जूझ कर उन पर अखंड विजय की सिद्धि पायी थी। कष्ट श्री षण्मुख को देख कर दूर भागते हैं। श्रीस्वामी के सन्निधान में कष्टों का कोई अस्थित्व नहीं है। इसलिए सुखमय जीवन की इच्छा करने वाले भक्तलोग श्री सुब्रह्मण्येश्वर की सेवा में तिरुत्तणी चले आते हैं। अस्तु।

पार्वती-शिव समुद्भूतं, अग्नि-गंगा संभरितम्।
नमामि सूर्य-संकाशं, अग्निद्योतक जन्मकारणम्॥

(समाप्त)

यह कलियुग है, अर्थात् लड़ाई झगड़ा, निराशा, कपट, अपवित्रता एवं क्रूरता का युग। फिर इस युग में इतने दोषों के साथ कोई कैसे धैर्य एवं शांति की कामना कर सकता है? कलि का युग सभी को पाप की ओर प्रेरित करता है, फिर वे पाप कर्म दुःखों का कारण बनते हैं। इस युग में कलि पुरुष ने कैसे प्रवेश किया, उसने कैसे चतुरता से सर्वत्र अधिकार जमा लिया और हम किस प्रकार उसके अजेय प्रभावों से अपनी रक्षा कर सकते हैं, इस कथा में इन सभी बातों का सुंदर चित्रण प्रस्तुत है। इस विषय में यह ज्ञात होना महत्वपूर्ण है कि कलि के युग की वर्तमान आयु अभी इसकी निर्धारित अवधि के प्रथम चतुर्थांश में ही है। यह जानकारी ''कलियुगे प्रथमपादे'' (कलियुग का प्रथम चतुर्थांश) जैसे सभी वेद मंत्रों द्वारा प्राप्त होती है। जब कलियुग के प्रथम चतुर्थांश में ही जीवन इतना घिनौना है तो आने वाली सदियों में मनुष्यों एवं जीवों को प्राप्त होने वाले दुःखों की कल्पना की जा सकती है। यह कल्पना करना किसी भी समझदार व्यक्ति के लिए कठिन नहीं है।

नैमिषारण्य नामक स्थान में कुछ ऋषियों ने एकत्रित होकर इस जगत में पहले ही प्रविष्ट हो चुके कलि के प्रभाव को नष्ट करने के लिए एक लम्बे समय तक चलने वाले यज्ञ का आयोजन किया। एक विचारशील व्यक्ति के लिए कलि का प्रभाव असहनीय होने के कारण उसके प्रभाव को यथासंभव कम करना ही उस यज्ञ का उद्देश्य था। लेकिन जब ऋषियों की वाँछित फल प्राप्ति की आशा समाप्त होने लगी तब उन्होने तुरंत यज्ञ छोड़ कर श्रीमद्भागवतम् के श्रवण का मार्ग अपनाया। भागवतम् का वर्णन ''कलि के अंधकार में सूर्य'' की भाँति किया गया है। अर्थात् इस कलि के युग में श्रीमद्भागवतम् ही वास्तविक सूर्य है। वर्तमान युग द्वारा सतो गुण के नष्ट होने से मनुष्यों का पतन होता

है। श्रीमद्भागवतम् कलि के प्रभाव से बचने का एक मात्र साधन है। इसी कारण श्रील व्यासदेव ने भागवतम् की रचना की और दीर्घकाल से वाँछित शांति को प्राप्त किया।

परम पुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्ण की इस पृथ्वी पर अद्भुत लीलाएँ पूर्ण होने के बाद जब वे स्वधाम वापस चले गये तब उनके प्रिय भक्त पाण्डवों ने भी इस जगत को छोड़ने का निश्चय किया। पाण्डवों ने संपूर्ण भूमण्डल पर शासन करने के लिए अपने पोते का राज्याभिषेक किया और अपने सभी कर्तव्यों को पूर्ण करके उत्तर दिशा की ओर प्रस्थान किया। राजा परीक्षित अभिमन्यु के इकलौते पुत्र थे। उनका विवाह राजा उत्तरा की पुत्री से हुआ और उनके जन्मेजय जैसे चार पुत्र हुए थे। राजा उत्तरा के पिता राजा विराट थे, जिनके राज्य में पाण्डव एक वर्ष के अज्ञातवास में रहे थे। परीक्षित के जन्मोपरान्त ही उनके संपूर्ण भूमण्डल के प्रतापी सम्राट होने की पूर्व घोषणा हुई थी। भूमण्डल के शासक बनते ही उन्होंने कृपाचार्य के निर्देशन में तीन अश्वमेध यज्ञ किये। उन समारोहों में राजा ने पुरोहितों एवं सभी योग्य व्यक्तियों को प्रचुर उपहार भेंट किये। अनेकों देवताओं ने भी उन यज्ञों में भाग लिया जिससे आम लोगों को भी उनके दुर्लभ दर्शन प्राप्त हुए। लेकिन कुछ समय बाद राजा परीक्षित को अपने राज्य में कलि का दुष्प्रभाव दिखाई देना प्रारम्भ हो गया। परम भगवान् कृष्ण के रहते यह पृथ्वी कलि के प्रभाव से मुक्त थी लेकिन भगवान के स्वधाम जाते ही कलि के दुष्प्रभाव सर्वत्र दिखाई पड़ने लगे। राजा परीक्षित ने इसे ध्यानपूर्वक देखा। कलि का प्रभाव माँसाहार, नशा, स्त्रियों एवं पुरुषों के अवैध संबंध एवं जुआ के रूप में दिखाई देता है। इन चार पाप कर्मों का पाया जाना कलियुग की प्रधानता का संकेत है।

राजा परीक्षित अपने राज्य में कलि के प्रवेश को सहन न कर सके। उन्होंने शीघ्र ही अपनी शक्तिशाली सेना के द्वारा कलि के आक्रमण का विरोध करने की तैय्यारी की। वह काले घोड़ों द्वारा खींचे जाने वाले रथ पर सवार हुए जिसकी ध्वजा पर सिंह का चिह्न बना था। तब उन्होने भद्राश्व, केतुमाल, भारत, उत्तरकुरु, किम्पुरुषवर्ष आदि राज्यों की यात्रा की। सभी जगह उन्होने वहाँ के लोगों से पाण्डवों की महिमा का प्रेम एवं स्नेहपूर्ण गायन सुना। उन्होने अपने दादाओं के गुणगान करने वाले गायकों को उपहार के रूप में प्रचुर मात्रा में धन दिया। इस प्रकार भ्रमण करते समय अचानक एक स्थान पर राजा परीक्षित ने एक असामान्य एवं अनोखा दृश्य देखा। उन्होने एक बड़े बैल एवं एक गाय को आपस में बातें करते देखा। बैल के तीन पैर टूटे थे और वह करुणापूर्ण क्रन्दन कर रहा था। वास्तव में वे सामान्य गाय और बैल नहीं थे। वह बैल साक्षात धर्म एवं गाय साक्षात धरती माता थीं। बैल अत्यंत उदास होकर गाय से उसकी दयनीय स्थिति के बारे में पूँछ रहा था। गाय भी बैल को यथासंभव सांत्वना देने का प्रयास कर रही थी। राजा परीक्षित ने उनके अनोखे वार्तालाप को उत्सुकता पूर्वक सुना।

उसी समय राजा की पोशाक में एक अत्यंत नीच व्यक्ति वहाँ आया। उसके हाँथ में एक घड़ी थी जिससे वह बैल के इकलौते पैर पर प्रहार करने लगा। वह व्यक्ति बहुत कुरूप था। वह ऐसा लग रहा था जैसे किसी दानव ने राजसी वस्त्र पहन लिए हों। अचानक ही वह दिखाई पड़ा और बैल को मारने लगा। बैल भयभीत होकर मूत्र त्यागने लगा। बैल की दयनीय दशा को देखकर गाय और अधिक विलाप करने लगी। राजा परीक्षित उस अधम व्यक्ति के अधार्मिक कार्य को देख कर भौचक्के रह गये और उसे तुरंत मारने के लिए अपनी तलवार उठा ली। जब राजा ने बल पूर्वक उस कलि पुरुष का सामना किया तो उसने तुरंत आधीन होकर राजा के पैर छू लिए। उसने क्षमा याचना और अपने जीवित रहने के लिए प्रार्थना की। इस बीच में राजा ने बैल एवं गाय को सुरक्षा देते हुए पूर्णतया आश्वस्त किया।

कलि पुरुष ने तब अपने राजसी आभूषणों एवं मुकुट को उतार कर राजा से क्षमा याचना की। तब राजा ने उसे क्षमा करते हुए तुरंत अपने राज्य से बाहर चले जाने का आदेश दिया। राजा परीक्षित ने ऊँचे स्वर में दृढ़ता पूर्वक कहा जहाँ सभी कार्य भगवान श्रीकृष्ण की प्रसन्नता के लिए किये जाते हैं वहाँ कलि के लिए कोई स्थान नहीं है। कलि बुरी तरह काँपने लगा और प्रार्थना की ''हे राजन! मैं कहाँ जा सकता हूँ? संपूर्ण पृथ्वी पर आप का ही राज्य है। और मैं जहाँ भी जाऊँगा वहाँ मुझे आप के भय का भयंकर रूप दिखाई देगा। इसलिए मैं शांति से कहीं नहीं रह पाऊँगा। अतः मैं आप से प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझे कुछ ऐसे स्थान दें जहाँ मैं निर्भीक होकर रह सकूँ। मैं आप को वचन देता हूँ कि मैं आप के द्वारा दिये स्थानों से बाहर कभी नहीं आऊँगा।'' राजा ने तुरंत कलि को रहने के लिए जुआ घर, वेश्यालय, पशुवध जगह एवं मधुशाला के स्थान दे दिये। लेकिन कलि इन चार स्थानों से संतुष्ट न हुआ तथा एक और स्थान पाने के लिए प्रार्थना की। तब राजा ने उसे स्वर्ण पाँचवे स्थान के रूप में दे दिया। अतः सभी संत व्यक्तियों को यह बात भली प्रकार जाननी चाहिए और कलि के प्रभाव से दूर रहने के लिए इन पाँच स्थानों पर नहीं जाना चाहिए। सोना सभी समस्याओं की जड़ है। जहाँ भी सोना होता है वहाँ असत्य, धृष्टता, असीमित इच्छा, शत्रुता एवं कलह का वास होता है। सोने के साथ यह सभी बुराइयाँ स्वयं ही प्रकट हो जाती हैं।

राजा, लोक नेता, ब्राह्मण तथा त्यागी एवं सन्यासी व्यक्तियों को कलि के इन स्थानों से दूर रहना चाहिए। लेकिन सोने को भगवान की सेवा में अर्पित करके कलि के प्रभाव से बचा जा सकता है। इस प्रकार राजा परीक्षित ने कलि के स्थानों को सीमित करके उसके बढ़ने पर रोक लगा दी और सभी व्यक्तियों के लिए स्वयं को कलि से बचाने का सुंदर अवसर प्राप्त हो गया। श्रीमद्भागवतम् में राजाओं, लोक नेताओं, ब्राह्मणों, संतों एवं सन्यासियों को राजा परीक्षित द्वारा कलि को दिये गये इन स्थानों के समीप कभी न जाने का विशेष सुझाव दिया गया है।

इस प्रकार राजा परीक्षित ने बैल अर्थात् साक्षात् धर्म के तीन खोये हुए पैर पुनःस्थापित करके धरती माता को प्रसन्नता प्रदान की। वास्तव में धर्म के चार पैर सत्य, दया, तप एवं शुचि हैं। कलि के प्रभाव से धर्म के तीन पैर अर्थात् दया, तप एवं शुचि लुप्त हो गये थे। इसी कारण धर्म केवल एक पैर पर लंगड़ाने लगा था। लेकिन राजा परीक्षित ने खोये हुए पैरों को पुनर्स्थापित करके धर्म को उसके चारों पैरों पर चलाया। बैल की खुशहाल स्थिति को देखकर गाय भी आनंदित हो गई। इस प्रकार राजा परीक्षित बैल एवं गाय दोनों को प्रसन्नता प्रदान करके अपने राज्य वापस लौट गये। राजा परीक्षित कलि को दिये पाँच स्थानों के बारे में अत्यधिक जागरूक हो गये और इस बारे में सभी व्यक्तियों को सचेत किया। अतः योग्य राजा परीक्षित के शासन में सभी व्यक्ति सुखी एवं समृद्धशाली हो गये। जिस प्रकार राजा परीक्षित ने अपने राज्य को कलि के प्रभाव से मुक्त किया उसी प्रकार यदि कोई व्यक्ति अपने जीवन को एक कलि-मुक्त स्थान बनाना चाहता है तो उसे हरि के पवित्र नाम ''हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे'' का जप करना चाहिए। कलिसंतरण उपनिषद में बताया सोलह नामों का यह जप कलि के दुष्प्रभावों से पूर्णतया मुक्त करने वाला है। भक्तों के संग में इस मंत्र का जप करने वाले व्यक्ति इस कलियुग में शांति पूर्वक रह सकते हैं। जिस प्रकार गर्मी की तीव्र लहर चलने पर भी वातानुकूलित कमरे में रहने वाले व्यक्ति उससे बच सकते हैं उसी प्रकार हरे कृष्ण मंत्र का जप करने वाले व्यक्ति सदैव पूर्णतया सुरक्षित एवं कलि के दुष्प्रभावों से दूर रह सकते हैं। ऐसी शांतिमय स्थिति में वे शुद्ध भक्तिमय सेवा करते हुए भगवद्धाम की प्राप्ति कर सकते हैं। यह निरंतर सत्य है कि सच्चाई एवं प्रेम पूर्वक हरिनाम का जप करना ही कलि के दुष्प्रभावों से बचने की दवा है। ❀

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

सप्तगिरि चंदादारों के लिए सूचना

सप्तगिरि मासिक पत्रिका पाठकों को हर महीने सही ढंग से पहुँचाने के लिए विविध क्रियाकलाप कार्य कर रहे हैं विषय पाठकगण समझ सकते हैं। इसी विषय के दौरान भक्तों का पता क्रमबद्ध करने के लिए कार्यवाहीन चर्याये लेते है। पाठकगण इस विषय को दृष्टि में रखकर निम्नलिखित प्रकार अपना संबंधित विवरण प्रधान संपादक कार्यालय को सूचित कीजिए।

१. 'सप्तगिरि' मासिक पत्रिका के बारे में सुझाव/सूचनाएँ/शिकायतों को sapthagiri_helpdesk@tirumala.org के द्वारा सूचित कीजिए।

२. सप्तगिरि चंदादारों का पता क्रमबद्ध कराने के लिए ०८७७-२२६४५४३ फोन नंबर को चंदादार फोन करके अपना पूरा पता, पिन कोड, मोबाइल नंबर जैसे विवरण कार्यकालीन (सुबह १०.३० से सायं ५.०० के अंदर) समयों में संपर्क करें।

३. उपरोक्त फोन नंबर या वेबसैट sapthagiri_helpdesk@tirumala.org के द्वारा भी अपने विवरण को बता दे सकते हैं।

४. आनलॉइन चंदादार अपने पूरे पते के संबंधित विवरण ति.ति.दे. वेबसैट के द्वारा बता दें।

प्रधान संपादक,
सप्तगिरि कार्यालय, तिरुपति।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

ति.ति.दे. प्रचुरण विक्रय विभाग

नूतन वर्ष - २०१९ के १२-पृष्ठ कैलेंडर; एस.वी. व एस.पी.; एस.वी. बडा कैलेंडर; एस.पी. बडा कैलेंडर; टेबल टाप कैलेंडर और डायरी(डीलक्स व आर्डिनरी) को खरीदने के लिए भक्तों के लिए ति.ति.देवस्थान उपलब्ध करा रही है।

इन्हीं को ति.ति.दे. प्रचुरण विक्रय केंद्र तिरुमल, तिरुपति, ति.ति.दे. समाचार केंद्र - चेन्नई, बेंगलूरु, हैदराबाद, दिल्ली तथा मुंबई के साथ-साथ अन्य प्रांतों में स्थित ति.ति.दे. (कल्याण मंडप) विवाह मंडपों में बेचेंगे। ति.ति.दे.वेबसैट "www.ttd.sevaonline.com" के द्वारा भी आनलॉइन से भक्तगण खरीद सकते हैं। उनका विवरण निम्न लिखित रूप से प्रस्तुत है।

विवरण	रु.
१२-पृष्ठ कैलेंडर	१००.००
टेबल टाप कैलेंडर	६०.००
डायरी (डीलक्स)	१३०.००
डायरी (आर्डिनरी)	१००.००
एस.वी.बडा कैलेंडर	१५.००
एस.पी.बडा कैलेंडर	१५.००
एस.वी और एस.पी कैलेंडर	१०.००
तेलुगु पंचांगम कैलेंडर	२०.००

अन्य समाचार के लिए - ०८७७-२२६४२०९ पर फोन कीजिए।

उपकार्यनिर्वहणाधिकारी,
ति.ति.दे. प्रचुरण विक्रय विभाग,
के.टी.रोड,
तिरुपति-५१७ ५०७.

जनवरी २०११ — श्री वेंकटेश! चरणौ शरणं प्रपद्ये!!

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

फरवरी २०११ — श्री वेंकटेश! चरणौ शरणं प्रपद्ये!!

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28		

मार्च २०११ — श्री वेंकटेश! चरणौ शरणं प्रपद्ये!!

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
31					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

जनवरी २०११

०१. नूतन अंग्रेजी वर्ष
१४. भोगी
१५. मकर संक्रांति
१६. कनुमा, श्री गोदादेवी का परिणयोत्सव
२१. श्री रामकृष्णतीर्थमुक्कोटि
२६. भारतगणतंत्र दिवस

फरवरी २०११

१२. रथसप्तमी
१३ से १९ तक तिरुपति श्री गोविंदराजस्वामी का प्लवोत्सव
१६. भीष्म एकादशी
१९. कुमारधारतीर्थमुक्कोटि
२४ से मार्च ४ तक श्रीनिवासमंगापुरम् श्री कल्याणवेंकटेश्वरस्वामी का ब्रह्मोत्सव
२५ से मार्च ६ तक तिरुपति श्री कपिलेश्वरस्वामी का ब्रह्मोत्सव

मार्च २०११

०४. महाशिवरात्रि
१३ से २१ तक तरिगोंडा श्री लक्ष्मीनरसिंहस्वामी का ब्रह्मोत्सव
१६ से २० तक तिरुमल श्री वेंकटेश्वरस्वामी का प्लवोत्सव
२०. तुंबुरुतीर्थमुक्कोटि, होली
२४ से २८ तक नागलापुरम् श्री वेदनारायणस्वामी का प्लवोत्सव

मई २०११ — श्री वेंकटेश! चरणौ शरणं प्रपद्ये!!

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

जून २०११ — श्री वेंकटेश! चरणौ शरणं प्रपद्ये!!

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
30						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

अप्रैल २०११

०१. अन्नमाचार्य वर्धंति
०२ से १० तक तिरुपति
श्री कोदंडरामस्वामी का ब्रह्मोत्सव
०५. बाबू जगजीवन राम जयंती
०६. श्री खर नाम संवत्सर उगादि
११. महात्मा ज्योतिबा फुले जयंती
१२ से २१ तक ओंटिमिट्टा
श्री कोदंडरामस्वामी का ब्रह्मोत्सव
१४. श्रीरामनवमी, तमिल नूतन वर्ष,
डॉ.बी.आर.अम्बेडकर जयंती
१६ से १८ तक तिरुमल श्रीवारि वसंतोत्सव
१९ से २७ तक नारायणपुरम्
श्री वेदनारायणस्वामी का ब्रह्मोत्सव

मई २०११

०६. अक्षयतृतीया, श्री परशुराम जयंती, सिंहाचल चंदनोत्सव
०८. श्री शंकर जयंती, श्री रामानुज जयंती
११ से १९ तक तिरुपति श्री गोविंदराजस्वामी का ब्रह्मोत्सव
१२ से १६ तक तिरुपति श्री पद्मावती श्रीनिवास का
परिणयमहोत्सव
१४. [illegible] (मेला)
१६ से २४ तक [illegible], नारायणवनम्
श्री कल्याणवेंकटेश्वरस्वामी का ब्रह्मोत्सव
१७. श्री नरसिंह जयंती, श्री तरिगोंडा वेंगमांबा जयंती
१७ से १९ तक तिरुच्चानूर श्री पद्मावतीदेवी का वसंतोत्सव
१८. श्री कूर्म जयंती, श्री अन्नमाचार्य जयंती
२८ से जून ३ तक कार्वेटिनगरम्
श्री वेणुगोपालस्वामी का ब्रह्मोत्सव
२९. श्री हनुमज्जयंती

जून २०११

१२ से २१ तक अप्पलायगुंटा
श्री प्रसन्नवेंकटेश्वरस्वामी का ब्रह्मोत्सव
१२ से १४ तक तिरुच्चानूर
श्री पद्मावतीदेवी का प्लवोत्सव
१४ से १६ तक तिरुमल श्रीवारि ज्येष्ठाभिषेक
२३ से २९ तक तिरुच्चानूर
श्री सुंदरराजस्वामी का अवतारोत्सव

तिरुमल तिरुपति देवस्थान
सप्तगिरि सचित्र मासिक पत्रिका

जुलाई २०११ — श्री वेंकटेश! चरणौ शरणं प्रपद्ये!!

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

अगस्त २०११ — श्री वेंकटेश! चरणौ शरणं प्रपद्ये!!

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

सितंबर २०११ — श्री वेंकटेश! चरणौ शरणं प्रपद्ये!!

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30					

जुलाई २०११

१२ से १६ तक तिरुपति
श्री गोविंदराजस्वामी का ज्येष्ठाभिषेक
१६. गुरुपूर्णिमा-व्यासपूजा, चंद्रग्रहण
१७. तिरुमल श्रीवारि आणिवार आस्थानम्
२०. आडिकृत्तिका
२७ से ३० तक तिरुपति
श्री कोदंडरामस्वामी का पवित्रोत्सव

अगस्त २०११

०१. श्री चक्रत्तालवार,
श्री परिवाडि मार्कंडर आपन वा.ति.ज.
०५. गरुड़ पंचमी
०९. श्री वरलक्ष्मीव्रत, श्री तरिगोंडा वेंगमांबा वर्धंति
१० से १३ तक तिरुमल श्रीवारि पवित्रोत्सव
१५. भारत स्वतंत्रता दिवस, श्री हयग्रीव जयंती,
श्री विखनसाचार्य जयंती, राखी पूर्णिमा
२३. गोकुलाष्टमी, श्रीकृष्णाष्टमी

सितंबर २०११

०१. श्री वराह जयंती, श्री बलराम जयंती
०२. श्री गणेश चतुर्थी
०३. ऋषि पंचमी
१०. श्री वामन जयंती
१० से १४ तक तिरुच्चानूर श्री पद्मावतीदेवी
का पवित्रोत्सव
१२. श्री अनंतपद्मनाभव्रत
१४ से २८ तक महालयपक्ष

२९ से अक्तूबर ८ तक तिरुमल
श्री वेंकटेश्वरस्वामी का वार्षिक ब्रह्मोत्सव

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि सचित्र मासिक पत्रिका

अक्तूबर २०१९ — श्री वेंकटेश! चरणौ शरणं प्रपद्ये!!

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

नवंबर २०१९ — श्री वेंकटेश! चरणौ शरणं प्रपद्ये!!

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

दिसंबर २०१९ — श्री वेंकटेश! चरणौ शरणं प्रपद्ये!!

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

अक्तूबर २०१९

०२. गांधी जयंती
०४. तिरुमल श्रीवारि गरुडसेवा, श्री सरस्वती पूजा
०५. तिरुमल श्रीवारि स्वर्ण रथ-यात्रा
०६. दुर्गाष्टमी
०८. विजयदशमी
२६. नरक चतुर्दशी
२७. दीपावली, श्री केदारगौरीव्रत,
तिरुमल श्रीवारि आलय में दीपावली आस्थान
२९. यमद्वितीया
३१. नागुलचविति

नवंबर २०१९

०४. तिरुमल श्रीवारि पुष्पयाग
०८ से १२ तक नारायणवनम्
श्री कल्याणवेंकटेश्वरस्वामी का पवित्रोत्सव
०९. कैशिकद्वादशी
१६. तिरुपति श्री कपिलेश्वरस्वामी का लक्ष बिल्वार्चन
२३ से दिसंबर १ तक तिरुचानूर
श्री पद्मावतीदेवी का ब्रह्मोत्सव
२५. श्री धन्वंतरी जयंती

दिसंबर २०१९

०१. तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का पंचमीतीर्थ
०२. तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का पुष्पयाग
०८. गीताजयंती ०९. श्री चक्रतीर्थमुक्कोटि
१०. तिरुपति श्री कपिलेश्वरस्वामी के आलय में
कार्तिकदीपोत्सव ११. श्री दत्त जयंती
१७. धनुर्मास आरंभ
२६. सूर्यग्रहण

(गतांक से)

सियाराम ही उपाय

शरणागति मीमांसा

(पंचम खण्ड)

सियाराम ही उपेय

मूल लेखक
श्री सीतारामाचार्य स्वामीजी, अयोध्या

प्रेषक
दास कमलकिशोर हि तापडिया

८१

श्रीमते रामानुजाय नमः

अब श्री देवराज गुरु कहते हैं कि कहिये महात्माओं! सच्चे महात्माओं का बर्ताव कैसा लोक विलक्षण होता है। किसी भी कष्ट के समय श्री अनन्ताल्वान स्वामीजी महाराज के समान हीं सच्चे मुमुक्षुओं को बर्ताव रखना चाहिए। शास्त्र प्रत्येक अधिकारी के लिये उनके अधिकार के अनुसार साधन और फलों का उपदेश किया करते हैं। इससे मुमुक्षुओं को अपने अधिकार के अनुगुण स्वरूपानुरूप ही साधन और फल को खूब छान बीन कर ग्रहण करना चाहिये। शास्त्र में लिखे होने के कारण दूसरे अधिकारियों के विषय की तरफ मुमुक्षुओं का कभी भी झुकाव नहीं होना चाहिए।

शास्त्रों में मन्द अधिकारियों के लिये सकाम भाव से याचना करने के लिये भी प्रमाणों की कमी नहीं है। वेद इतिहास पुराण आदि में जहाँ देखो वहाँ सकाम प्रसंग की भरमार है। परन्तु वह मुमुक्षुओं के काम का नहीं है। जैसे वद्यक ग्रंथों में अभक्ष वस्तुओं का भी रोगियों के लिये प्रयोग करने का बहुत जगह लिखा है। परन्तु वे सब फलाहारियों के काम के नहीं है। इसी प्रकार जहाँ-जहाँ ऐहिक पदार्थों की याचना करने को प्रार्थना किया है वह बिल्कुल सत्संग हीन अपने स्वरूप को नहीं समझने वाले अर्थ पञ्चक ज्ञान विहीन सामान्य अधिकारियों के लिये ही है। मुमुक्षुओं के लिए तो श्रीमद्भागवत एकादश स्कन्ध में खुले शब्दों में सकाम भावना को त्याग करने के लिये ही खुद श्री भगवान ने श्री मुख से आज्ञा की है वह यह श्लोक है-

फल श्रुति रियं नृणां न श्रेयो रोचनं परम्।
श्रेयो बिवक्षया प्रोक्तं यथा भैषज्य रोचनम्।।

इसका भाव यह हुआ कि भगवान श्रीकृष्णजी, उद्धवजी से कहते हैं कि हे उद्धवजी! वेदादिक शास्त्रों में जो फल श्रुति है याने परमात्मा के मिलने के अतिरिक्त जो और फल देने के लिए सामान्य चेतनों को जो प्रलोभन दिया गया है वह भाव वास्तव में कल्याण करने वाला नहीं है। सिर्फ इसके लिए है कि सामान्य अधिकारी लोग कुछ भी फल के प्रलोभन दिये बिना श्री भगवान की तरफ झुक नहीं सकते हैं। इतना ही मात्र उसका उद्देश्य है। जैसे रोग निवृत्ति के लिए कड़वी औषधि बालकों को देने लगते हैं

और वे अपनी अज्ञानतावश नहीं लेना चाहते हैं तो कुछ भी उनके मन के अनुकूल चीज देने का लोभ दिखाया जाता है तब बच्चे कड़वी से कड़वी भी औषधि ले लेते हैं। जैसे यह श्लोक है कि-

लड्डुकं ते प्रदास्यामि गुरुचिं पिव पुत्रक।

इसका भाव पिता ने लड़के को किसी रोग छूटने के लिए गुरुच का अर्क पिला रहा था। परन्तु लड़का अपने अज्ञानतावश किसी तरह पिता के समझाने पर भी जब गुरुच का रस नहीं पी रहा था तो पिता ने कहा बेटा! तुझे मैं लड्डू देऊँगा इस रसको जरूर पी लो। इस बात को सुनते ही लड़के ने लड्डू के लोभ से तुरन्त ही गुरुच के अर्क को पी लिया। बाद एक दिन एक लड्डू भी दिया। इसका मतलब यह था कि इसे बहुत बार कडुई औषधि खिलानी है यदि एक बार भी लड्डू नहीं देऊँगा तो आगे हमारे प्रलोभन को झूठा समझकर फिर औषधि नहीं लेगा। श्री भगवान कहते हैं कि हे उद्दवजी! बस यही दशा शास्त्रों में फल भाग की समझिए। शास्त्रों में जो यह कहा है कि भगवान का भजन करो तो तुम्हें बेटा मिलेगा, धन मिलेगा, नाती

शास्त्रों में जो यह कहा है कि भगवान का भजन करो तो तुम्हें बेटा मिलेगा, धन मिलेगा, नाती मिलेगा, औरत मिलेगी। इस तरह से सत्संग हीन सामान्य अधिकारी लोग जब सुनते हैं तो उस लोभ में पड़कर इच्छा न होने पर भी श्री भगवान के भजन, कीर्त्तन, स्मरण, दर्शन, ध्यान, पूजन वगैरह में लग जाते हैं।

मिलेगा, औरत मिलेगी। इस तरह से सत्संग हीन सामान्य अधिकारी लोग जब सुनते हैं तो उस लोभ में पड़कर इच्छा न होने पर भी श्री भगवान के भजन, कीर्त्तन, स्मरण, दर्शन, ध्यान, पूजन वगैरह में लग जाते हैं। कभी-कभी उनका दिल बढ़ाने के लिए शास्त्रों में विश्वास और आस्तिकता बने रहने के लिए कुछ फल भी दे दिया जाता है। परन्तु वास्तव में नाशवान पदार्थ देना शास्त्रों का असली तात्पर्य नहीं है। तात्पर्य यह है कि किसी तरह यह जीव श्री भगवान में लग जावे और शास्त्रों में इसका विश्वास जम जावे। फिर महात्माओं के सत्संग में जब बैठने लगेगा, सत्संग में रुचि बढ़ जावेगी तो कभी यह भी उसे ज्ञान हो जायगा कि श्री भगवान से नाशवान पदार्थ क्या मांगना? यह माँगना चाहिए कि हमें भवसागर से पार करके बिरजा नहवाय कर नित्य मुक्तों के समान कृपा करके अपनी नित्य सेवा स्वीकार करिये। इसी उद्देश्य से शास्त्रों में सामान्य अधिकारियों के लिए किसी प्रकार ऐहिक पदार्थों का प्रलोभन देकर श्री भगवान में लगाने के लिए फल श्रुति का उपदेश किया। असली उद्देश्य शास्त्रों का फल देने में नहीं है। जैसे बच्चे को लड्डू का प्रलोभन देने में या लड्डू दे देने में हृदय से पिता का उद्देश्य नहीं है प्रधान भाव तो उसका यह है कि किसी प्रकार यह लड़का गुरुच का रस पी जाय और इसकी हड्डी से बुखार निकल जाय और यह निरोग रहता हुआ चिरंजीवी रहे। हे उद्धवजी! यह फल भाग स्वरूप को समझने वाले सच्चे मुमुक्षुओं के लिए नहीं है। सच्चे मुमुक्ष को तो मैं खुद भी सांसारिक पदार्थ देना चाहूँ तो वह नहीं स्वीकार करते हैं और घबड़ाते हैं। जैसे महाराज पृथु को मैं बहुत कुछ मांगने को कहा परन्तु उन्होंने किसी प्रकार भी कहने पर मेरी सेवा के अतिरिक्त कुछ भी नहीं माँगा। इसी तरह भक्त प्रह्लाद को माँगने के लिए बहुत आग्रह किया परन्तु हमारी सेवा के अतिरिक्त कुछ भी नहीं माँगा।

(क्रमशः)

युवता

संदेहों का पूर्णतया अंत करके अपने कार्यों को चमकाओ

तेलुगु मूल - डॉ.वैष्णवांघ्रिसेवक दास
हिन्दी अनुवाद - श्री अमोघ गौराँग दास

कोई व्यक्ति प्रश्न पूँछ सकता है कि ''हमें वास्तविकता में भगवद्गीता की आवश्यकता क्यों है?'' सभी व्यक्ति चार दोषों से ग्रसित होते हैं। यह चार दोष १) त्रुटि करना, २) भ्रमित होना, (अर्थात् किसी वस्तु या तथ्य को उससे भिन्न समझना), ३) धोखा देने की प्रवृत्ति होना एवं ४) इंद्रियों का त्रुटिपूर्ण होना हैं। वैज्ञानिक, विद्वान, देश के शासक या भिखारी सभी में यह चार दोष पाये जाते हैं। वेद का अर्थ है ज्ञान और वेदान्त वेद का शिखर है जिसे उपनिषद कहते हैं। भगवद्गीता सभी उपनिषदों का सार है। अतः भगवद्गीता में संपूर्ण ज्ञान निहित है। भगवद्गीता समस्त देशों के संपूर्ण साहित्यिक संग्रहों द्वारा उपलब्ध ज्ञान को प्रदान करने के साथ ही उस ज्ञान से भी अवगत कराती है जो अनयत्र कहीं उपलब्ध नहीं है।

त्रुटि करना मनुष्यों का पहला दोष है। त्रुटि जाने या अनजाने में होती हैं। जानबूझकर की हुई त्रुटि को धोखा देना कहा जाता है। अनजाने में हुई त्रुटियों से भ्रम की उत्पत्ति होती है। अज्ञानता होने पर भी ज्ञान का ढ़ोग करना धोखा देने के तुल्य है। द्वापर युग के अंत में कर्ण एक बार परशुरामजी के पास धनुर्विद्या सीखने के लिए गये थे। उस समय कर्ण ने स्वयं को ब्राह्मण घोषित किया। परशुराम ने कर्ण के शब्दों पर विश्वास कर लिया। अर्थात् उन्होने असत्य को सत्य समझा। इसे भ्रमित होना कहा जाता है। कर्ण ने अपने जन्म के बारे में सच्चाई न बताकर परशुराम को धोखा दिया। यह भी मनुष्यों का एक दोष है। मनुष्यों की इन्द्रियाँ त्रुटिपूर्ण होती हैं। वे स्वयं सत्य को समझने एवं उसकी अनुभूति करने में असमर्थ होते हैं। हमारे नेत्रों को सूर्य एक गोले की तरह प्रतीत होता है। लेकिन सूर्य पृथ्वी से भी बड़ा एक ग्रह है। अर्थात् हमारी इन्द्रियाँ सही आकलन करने में असमर्थ हैं। परशुराम को यह पता नही चला कि कर्ण ने उनसे अपने जीवन के बारे में झूठ बोला। यह त्रुटिपूर्ण इन्द्रियों का उदाहरण है। एक दिन परशुराम शांति पूर्वक कर्ण की गोद में सर रखकर सो रहे थे। उसी समय एक भयानक कीड़ा कर्ण को काटने लगा। अपने स्वामी की निद्रा में बाधा न पड़ने के उद्देश्य से कर्ण ने उस पीडा को सहा। लेकिन कीड़ा इतनी प्रचंडता से काटने लगा कि उनका रक्त बहने लगा और बहती रक्त धार ने परशुराम को स्पर्श कर लिया। परशुराम तुरंत जगे और परिस्थिति को समझ गये। उन्होंने सोचा कि इतनी पीड़ा को सहन करने वाला एक ब्राह्मण नहीं हो सकता है। और यह ज्ञात होते ही कि कर्ण एक क्षत्रिय है, परशुराम ने उसे आवश्यकता के

पल में सीखी हुई संपूर्ण विद्या भूल जाने का शाप दे दिया। उस शाप के कारण कर्ण की अर्जुन का वध करने की तीव्र इच्छा उनका एक भ्रम बन गई। इस प्रकार सभी मनुष्य उन पर निरंतर लागू होने वाले चार दोषों द्वारा सीमित होते हैं। इसीलिए उनके द्वारा दिये सभी संदेश अपूर्ण होते हैं और सदैव लागू नहीं होते हैं। लेकिन, भगवद्गीता का संदेश प्रत्येक जाति, धर्म, वर्ग एवं आयु के समस्त देशों के देश वासियों के लिए सदैव ही उपयुक्त है।

स्वयं या अपने साथियों की बुद्धिमत्ता पर निर्भर होने वाला व्यक्ति निश्चित रूप से संदेहों से घिरा रहता है। संदेहों की उत्पत्ति मन से होती है। लेकिन भगवान कृष्ण ने भगवद्गीता में आत्मा के स्तर पर रहकर सभी संदेहों का पूर्णतया अंत करने का उपदेश दिया है। ग्रंथों पर संदेह करने वाले व्यक्ति का पतन निश्चित है।

''जो श्रद्धालु दिव्यज्ञान में समर्पित हैं और जिसने इन्द्रियों को वश में कर लिया है, वह इस ज्ञान को प्राप्त करने का अधिकारी है और इसे प्राप्त करते ही वह तुरन्त आध्यात्मिक शांति को प्राप्त होता है।'' (भगवद्गीता अध्याय-४, श्लोक-३९) ''किन्तु जो अज्ञानी तथा श्रद्धाविहीन व्यक्ति शास्त्रों पर संदेह करते हैं, वे भगवद्भावनामृत नहीं प्राप्त करते, अपितु नीचे गिर जाते हैं। संशयात्मा के लिए न तो इस लोक में, न ही परलोक में कोई सुख है।'' (भगवद्गीता अध्याय-४, श्लोक-४०)।

इसी कारण भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को मन के सभी संदेहों का ज्ञान की तलवार से पूर्णतया अंत करके योग की शक्ति प्राप्त करने का उपदेश दिया। भगवान श्रीकृष्ण का यह उपदेश सभी के लिए सदैव उपयुक्त है। आज लोगों को दिव्य ग्रंथों के बारे में पता नहीं है। वे दिव्य ग्रंथों की प्रासंगिकता पर भी संदेह करते हैं और उनका अध्ययन नहीं करते हैं। वे केवल जीवन के उन अंतिम दिनों में दिव्य ग्रथों को पढ़ने का प्रयत्न करते हैं जब उन्हे जीवन से कुछ भी प्राप्त नहीं करना होता है। सभी कार्यों में संदेह आते हैं, लेकिन प्रत्येक व्यक्ति को ग्रंथों का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए और इसके लिए ग्रंथों के अध्ययन का अभ्यास करना आवश्यक है। ग्रंथों का ज्ञान एक तीव्र तलवार की भाँति है। भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को ज्ञान की तलवार से सभी संदेहों का पूर्णतया अंत करने का उपदेश दिया। सामान्यतः स्कूल एवं कालेज की पुस्तकों द्वारा प्राप्त शिक्षा, मन से उत्पन्न होने वाले संदेहों का अंत करने में असमर्थ होती है। केवल भगवद्गीता के ज्ञान से ही संदेहों का पूर्णतया अंत किया जा सकता है। अतः अनुभवी व्यक्तियों से भवगद्गीता का ज्ञान प्राप्त करके सभी युवाओं एवं विद्यार्थियों को उनके नित्य अध्ययन के समय उत्पन्न होने वाले संदेहों का पूर्णतया अंत करके अपने कार्यों को चमकाना चाहिए। इस प्रकार उन्हे सभी प्रयत्नों में सफलता निश्चित रूप से प्राप्त होगी। भगवद्गीता पर विश्वास करने वाले व्यक्तियों की सफलता इस तथ्य का प्रमाण है।

(गतांक से)

श्री रामानुज नूट्रन्दादि

मूल - श्रीरंगामृत कवि विरचित

प्रेषक - श्री श्रीराम मालपाणी

आण्डुहळ् नाळ् तिंगळाय्, निहळ्काल मेल्लाम् मनमे
ईण्डु पल्योनिहळ् तोरुळल्वोम्, इन्नो रेण्णिन्रिये
काण्डह्नु तोळण्णल् तेन्नत्तियरर् कळलिणैक्कीळ्
पूण्ड वन्बाळन्, इरामानुजनै प्पोरुन्दिनमे॥३१॥

अयि भो हृदय! दिनक्रमेण मासक्रमेण वर्षक्रमेण च व्यतियत्सु भूयस्सु कालेषु नानायोनिजन्म भिरुच्चाव चक्लेशाननुभूतवन्तो वयम् अद्य तावदचिन्तितमेव हि स्पृहणीयभुजशालिहस्त्यद्रिनाथवरदाधिराज भगवत्पादाब्जभक्तं श्रीरामानुजमाशिश्रियाम; अनिर्वचनीयं खलु भाग्यमेतन्नः।

हे मन! दिनों, मासों और वर्षों के रूप से बीते हुये सारे भूतकाल में नाना प्रकार की योनियों में जन्म लेकर नानाविध क्लेशों का अनुभव किये हुए हमने आज एकाएक ही सुंदर भुजवाले श्रीहस्तिगिरिनाथ श्री वरदराज भगवान के पादभक्त श्री रामानुजस्वामीजी का आश्रय लिया। ओह! हमारा भाग्य अचिंतनीय है!

भूतकाल में नाना प्रकार की योनियों में जन्म लेकर नानाविध क्लेशों का अनुभव किये हुए हमने आज एकाएक ही सुंदर भुजवाले श्रीहस्तिगिरिनाथ श्री वरदराज भगवान के पादभक्त श्री रामानुजस्वामीजी का आश्रय लिया। ओह! हमारा भाग्य अचिंतनीय है!

(क्रमशः)

आयुर्वेद

यह सामान्य से सुनने में आता है की "पेट में दर्द हो रहा है? तो थोडा अजवाइन चबा लेना। जल्दी कम हो जायेगा।" सिर्फ पेट दर्द के लिये ही नही बल्की और भी अनेक तरीके से इसका प्रयोग किया जाता है। अजवाइन को तेलुगु में "वामु", कन्नड में 'ओम काळु' और अंग्रेजी में 'Carom Seeds' कहा जाता है।

यह मुख्यत: ईजिप्ट का है। परन्तु इसको सभी देशों में पाया जाता है। संस्कृत में इसके 'यवानी' कहा जाता है। आयुर्वेद में भी दवाइँया तैयार करने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। इसका वैज्ञानिक नाम (Latin Name) है। Carum copticum/Trachyspermum ammi.

इसका कुल (Family) है umbelliferac (Apiaceae). इसको पूरे भारतवर्ष में व्यवसाय किया जाता है। यह शुष्क वातावरण में अथवा आधा-शुष्क वातावरण में रहनेवाला पौधा है जिसके माटी में लवणांश ज्यादा होता है। यह कफ और वात दोष के लिये अच्छा है। पित्त को बढ़ाता है।

आयुर्वेद गुणधर्म

रस - कटु (थीका), तिक्त (कडवा)

गुण - लघु (हलका), रूस (शुष्क), तीक्षण

वीर्य - उष्ण

विपाक - कटु (पचन के बाद बचनेवाला रस)

प्रयोज्यांग

फल और बीज

मात्रा - फल १ से ३ ग्राम

तैल - १ से ३ ड्राप्स

अर्क - ५ से १० ड्राप्स

अजवाइन के रासायनिक संघटन/पोषकांशं

अजवाइन के बीज और तैल में बहुत सारे पोषकांश मिलते है। कुछ इस प्रकार हैं- प्रोटीन-१७.१%, तैल की मात्रा/फाट्स-२१.८%, खनिजांश-७.८%, फैबर-२१.२%, कार्बोहैड्रेट्स-२४.६%, इसके साथ इसमें केल्शियम, पोटाशियम, सोडीयम, फास्फरस्, थैमिन, ऐरन्, नियासिन, थैमॉल इत्यादि।

अजवाइन के आमायिक प्रयोग

अगर मुँह में कडवा-कडवा आता हो या फिर छाती जलती हो, ठीक से भूख नहीं लगती है - यह कुछ Acidity के लक्षण हैं। ऐसे परिस्थिति में अजवाइन चूर्ण+जीरा चूर्ण मिलाकर रखना चाहिए। लेते समय इस मिश्रण को ३ ग्राम्स + ३ ग्राम्स शुण्ठि का चूर्ण मिलाकर गरम पानि में आधे घण्ठे पहला (खाने से पूर्व) दिन में दो बार लेना चाहिए। इससे Acidity का तकलीफ कम हो जाता है।

अगर खासी हुई, छाती कफ से भरा होतो ६ ग्राम्स अजवाइन का चूर्ण गरम पानी में मिलाकर दिन में दो बार खाने के बाद प्रयोग करें। यह छाती में भरा हुआ कफ को बाहर निकालने में सहायता करेगा। इसके अलावा अगर अस्तमा है तो या फिर श्वाससंबन्धित अलर्जी है तो अजवाइन चूर्ण (४ ग्राम्स) को गुड के साथ मिलाकर तीन बार लेना चाहिए।

अगर अजीर्ण हुआ है या फिर इन्फेक्शन हुआ है तो अजवाइन के जल को पीना चाहिए।

एक लोटा पानी में दो बून्दे लौंग का तैल, दो बून्दे अजवाइन का तैल डालना चाहिए। इससे कुल्ला करना चाहिए। इससे दान्तों में दर्द होना कम हो जायेगा और यह मुँह के दुर्गन्ध को कम करने भी सहायक है।

सामान्य से होनेवाली सर्दी में भी यह सहायक है। जब सर्दी होती है तो गरम पानी का भाप लिया जाता है। इस

पानी अजवाइन के थोडे बीज डालना चाहिए। यह बन्द नाक को जल्द से खोलने में सहायक है।

अगर शरीर में खुजली हो रही है तो अजवाइन को गरम पानी में पीस लें और इस पेस्ट को जहाँ खुजली हो रही है, वहाँ पर लगायें। सूखने पर धो दे। इससे खुजली कम हो जायेगी। उस भाग को अजवाइन के जल से भी धो सकते हैं।

अगर चर्मरोग के कारण सूज आयी हो तो अजवाइन को निम्बु रस के साथ पीस लें और इस पेस्ट को सूजे हुए जगह पर लगायें।

अगर महिलाओं में मासिक धर्म में, ठीक तरह से रक्त नहीं निकल रहा हो या फिर समय पर मासिक धर्म नहीं आरहा हो, तो हर दिन रात को १२ ग्राम्स अजवाइन को पानी में डालकर रख दें और सुबह उसी पानी में उसको पीसकर इस मिश्रण को लें।

अगर अजीर्ण जैसा लग रहा है तो एक चम्मच अजवाइन को शक्कर के साथ या बिना शक्कर के साथ चबायें।

सन्धियों में दर्द हो रहा है तो अजवाइन के तैल को सन्धियों पर लगाकर मसॉज करें। या फिर अजवाइन को पानी के साथ पेस्ट बनाकर भी लगा सकते हैं। सूखने तक रखना चाहिए।

अगर अतिसार हो रहा है तो, १२ ग्राम्स अजवाइन को एक लोटा पानी में गरम करना चाहिए। इसको दिन में दो बार लेना चाहिए।

रात को अजवाइन के चूर्ण को दही के मिलाकर रात को चहरे पर लगाना चाहिए। सुबह गुनगुना पानी से धोना चाहिए। इससे चहरे पर जो धाग होते हैं वे कम हो जाते हैं।

सरसों के तैल में अजवाइन के चूर्ण को डालना चाहिए। इसमें कागज को पूरी तरह से डालना चाहिए। इस कागज को घर के कमरों के कोने में बान्धना चाहिए। इससे मच्छर नहीं आते।

हिंग्वाष्टक चूर्ण करके एक आयुर्वेदिक औषधि आती है। इसमें अजवाइन रहता है। इस चूर्ण को एक चम्मच खाने के पहले निवाले के साथ थोडा घी डालकर लेना चाहिए। यह उपाय भूख को मतबल जठराग्नि को सही करता है।

अगर मूलव्याधि की समस्या है तो खाने के बाद ताक के साथ अजवाइन चूर्ण+काला नमक=एक चम्मच डालकर लेना चाहिए।

अजवाइन के बीजों को कुछ इमली के बीजों के साथ घी डालकर गरम करना चाहिए। इसका चूर्ण बनाकर रखना चाहिए। इस मिश्रण को रात के सोने से पहले एक चम्मच दूध में थोडा शहद डालकर लेना चाहिए। इससे लैंगिक समस्यायें कम होती हैं ऐसा संशोधन से पता चला है। अच्छे परिणाम के लिए नियमित रूप से इसका प्रयोग करना चाहिए।

एक लीटर पानी में एक चम्मच सौंफ का चूर्ण+१/२ चम्मच अजवाइन का चूर्ण डालकर पांच मिनिट उबालना चाहिए। थण्डा करके इस पानी को पीने के प्रयोग करना चाहिए। इससे माताओं दूध बढ़ता है। (यह प्रसूती स्त्रीयों के लिए बतायी गयी है।)

मासिक धर्म में कुछ स्त्रीयों को पेट बहुत दर्द करता है। ऐसी स्थिती में, अजवाइन के तैल को पेट पर लगाना चाहिए। हलका लगता है।

अजवाइन निम्बु रस डुबोकर छाया में सुखाना चाहिए। सूखने के बाद इसको काले नमक के साथ पीसना चाहिए। इसको ६ ग्राम्स की तरह दिन में दो बार गुनगुना पानी के साथ लेना चाहिए। इससे पेट में अजीर्ण के कारण दर्द हो, भूख कम लगती हो या फिर गैस होता हो, तो कम हो जाता है।

अजवाइन+शुण्ठि+इलायची+काला नमक=चूर्ण बनाकर रख लें। इस मिश्रण को ४ ग्राम्स की मात्रा में दिन में तीन

बार गुनगुना पानी के साथ खाने के बाद लें। यह कब्ज के लिए, अजीर्ण के लिए, गैस पकडता हो तो लाभकारी है।

अगर मैग्रेन की समस्या हो तो अजवाइन को एक tissue paper में बान्ध लें और उसका गन्ध लेते रहें। यह मैग्रेन को कम करने में सहायक है।

जो लोग शराब छोडना चाहते हैं, उनके लिए भी यह सहायक है। अजवाइन को मुहँ में चबाने से शराब की चाहत कम हो जाती है।

सुबह खाली पेट अजवाइन का पानी पीने से वजन कम होता है। या फिर हर सुबह खाली पेट एक चमचा अजवाइन चबाकर खाना चाहिए। यह भी वजन कम करने में सहायक है।

बच्चे रात को बिस्तर गीला करते हैं। इसके लिए काले तिल (५० ग्राम्स) + अजवाइन (२५ ग्राम्स) + गुड (१०० ग्राम्स) मिश्रण करके रखना चाहिए। इस मिश्रण को बच्चे के आयु के हिसाब से दिन में दो बार देना चाहिए। अगर कोई बार बार पिशाब के लिए जाता है तो उसको भी दे सकते हैं। १८ साल के ऊपर ६ ग्राम्स दिन में दो बार देना चाहिए। बच्चों के लिए मात्रा निर्धार करने के लिए किसी संबंधित आयुर्वेद वैद्य का सम्पर्क करें।

कान में दर्द हो रहा है तो, एक चम्मच लहसुन और दो चम्मच अजवाइन के बीज को सरसों के तैल में लाल होने तक गरम करें। फिर इसको थण्डा कर, इनको दबाकर तेल निकालें। इस तेल कान में दर्द हो रहा है तो प्रयोग करें। कान में दर्द अनेक कारणों से होता है। इसीलिए वैद्य से सम्पर्क करने के बाद ही इसका प्रयोग करें। अपने आप ना करें।

सफेद बालों के लिए

कडी पत्ते - २ से ३ + सूखे हुए द्राक्षा (२) + अजवाइन (एक चुटकी)- इसको एक लोटा पानी में पकाना चाहिए। स्वाद के लिए शक्कर डाल सकते हैं। इसे हर दिन एक लोटा पीना चाहिए। इससे उसमय जो बाल सफेद होते हैं वह कम हो जाता है।

नीम के पत्तों को छाया में सुखाकर चूर्ण बनाकर रखना चाहिए। रात में एक चम्मच यह चूर्ण गरम दूध के साथ आधा चम्मच जीरा के चूर्ण और आधा चम्मच अजवाइन के चूर्ण के साथ ३० दिन तक मधुमेह में लेना चाहिए।

पक्षाघात के कारण हाथ-पैर हिल रहे हो, तो अजवाइन जल का प्रयोग लाभकारी है।

अगर ठीक से सुनायी नहीं दे रहा हो तो, अजवाइन का तैल कान में डालना चाहिए (१ - २ Drops)।

Cholesterol के समस्या में भी यह लाभदायक है। अजवाइन में जो फैबर है, वह बढ़े हुए LDL Cholesterol को कम करने में सहायक है।

अजवाइन का Essential oil व्रण को साफ करने प्रयोग कर सकते हैं।

अजवाइन के प्रयोग में सावधानियाँ

सही मात्रा में लिया तो कोई दुष्परिणाम नहीं है। मगर ज्यादा लिया तो कुछ हो सकते हैं जैसे-पेट में जलना, चक्कर आना, शरीर का तापमान बढ़ना, सरदर्द, उल्टी आना, इत्यादि। लोग जो पित्त प्रकृति के हैं और जो लिवर की समस्या से जूज रहे हैं वे इसका प्रयोग कम करें या ना करें। अजवाइन को सूरज की रोशनी से दूर और शुष्क रखना चाहिए। यह ज्यादा दिन तक नहीं टिकता है।

यहाँ पर जो भी बताया गया है, वह जानकारी के लिए है। तत् संबंधित आयुर्वेद वैद्य के सलाह पर ही लें। स्वयं वैद्य ना करें। धन्यवाद।

पीने का पानी और सुरक्षाः अलिपिरि से पैदल रास्ते में जानेवाले भक्तों को रास्ते भर पीने के पानी को प्रबंध किया गया है और यात्रियों की सुरक्षा के लिए देवस्थान ने सुरक्षाकर्मियों की नियुक्ति की।

श्रीकृष्णसखा सुदामाजी

- श्रीमती प्रीति ज्योतीन्द्र अजवालिया

आज हम भगवान श्रीकृष्ण के प्रिय सखा सुदामाजी चरित्र का अनुसंधान करने जा रहे है।

भगवान श्रीकृष्ण की शरण में जाने के लिये मनोमंथन

श्री सुदामाजी भगवान श्रीकृष्ण के सखा थे। वे ऐसे निष्काम भक्त थे कि उनके घर में कभी सेरभर आटा एकत्र नहीं हो पाया। एक दिन उनकी पत्नी ने समीप आकर स्मरण कराया कि आपको तो द्वारकानाथ श्रीकृष्ण से बडी भारी मित्रता है। स्त्री की बात सुनकर उन्होंने कहा- हाँ, अवश्य हमारी और उनकी गहरी मित्रता है। तब सुदामाजी की स्त्री सुशीला ने कहा - तो आप एक बार उनके समीप द्वारकापुरी को चले जाइये। उनके सुन्दर वदन का दर्शन कर आइये और जो कुछ भी मिले, उसे ले आइये। उसके द्वारा दी गयी वस्तु मुझे परम सुख देनेवाली होगी। सुदामाजी ने कहा- तुम ने बात तो अच्छी कही, परंतु इससे सातों लोकों में बड़ी बदनामी होगी। लोग यही कहेंगे कि मालूम पड़ गया कि सुदामा ने इसीलिये मित्रता की थी।

> जब श्री सुदामाजी द्वारका से अपने ग्राम को आये उन्होंने देखा कि वह नया और अत्यन्त सुन्दर नगर हो गया है। उसकी रचना और उसका ऐश्वर्य द्वारका के समान है, उसे देखकर वे विचारने लगे कि मेरी झोंपड़ी और ब्राह्मणी कहाँ गयी? क्या यहाँ किसी राजा ने नगर बसा दिया। इतने में ही भगवत्कृपा से प्राप्त ऐश्वर्य और पति दर्शन के आनन्द से मग्न हुई सुदामाजी को स्त्री सेकड़ों सखी-सहेलियों को साथ लेकर आयी।

यह सुनकर सुशीला ने कहा - श्रीकृष्ण के मधुर रूप के दर्शन करने का भी मन नही चाहता है क्या? आप केवल दर्शन कर आइये? कुछ भी याचना न कीजियेगा। उसने जब ये वचन सुनाये, तब प्यारे श्रीकृष्ण के सुन्दर स्वरूप का स्मरण हो आया और वे अपने प्रिय मित्र से मिलने चले। मार्ग में आनन्द से पग-पग पर झूमते हुए वे द्वारकापुरी को आये। उनके नेत्र श्रीकृष्णचन्द्र की रूपसुधा के प्यासे थे। कोई राजपुरुष महलों में जाने से रोक न दे, इसलिए श्री सुदामाजी मन में डर रहे थे। किसी तरह मन को मजबूत करके सुदामाजी ने राजद्वार लाँघकर राजभवन में प्रवेश किया। मानो प्रभुदर्शन की तीव्र अभिलाषा ने ही हाथ पकड़कर उन्हे प्रभु के निकट पहुँचा दिया।

श्यामसुंदर के राजमहल में सुदामाजी का आदर सत्कार

श्यामसुन्दर श्रीकृष्ण भगवान ने देखा कि परम प्रिय मित्र श्री सुदामाजी पधारे हैं। इनके अचानक आ जाने से वे प्रेमवश कुछ देर के लिये चित्र की तरह स्तब्ध खड़े रहे। फिर सावधान होकर दौड़े और रोते हुए उनको गले ले लगा लिया। कुछ देर तक वे दोनों मित्र परस्पर छाती से लगाकर इस प्रकार मिले रहे कि मानो दोनों का शरीर एक हो गया है। इतने में भगवान को सुदामाजी को दुर्बलता का स्मरण हो आया, सोचा कि मेरे गाढ़ालिंगन से भी उन्हें पीड़ा हो रही होगी। इधर सुदामाजी को अपने देह-दौर्बल्य की स्मृति हुई, इन्होंने सोचा कि मेरा अस्थिपंजर कोमल श्री अंग में चुभ रहा होगा। हम विचारों से दोनों का मिलन छूटा। इतने में ही भगवान के संकेत से श्री रुक्मिणीजी सोने की झारी में जल ले आयीं। भगवान ने अपने श्रीहस्तकमल से सुदामाजी के चरण धोये और उन्हें शय्या पर पधराया। फिर उस समय की चर्चा चलायी, जब दोनों उज्जैन में सान्दीपनी मुनि के आश्रम में अध्ययन करते थे। भगवान ने पुरानी चर्चा चलाकर उन्हें सुख के समुद्र में डुबो दिया और स्वयं भी अत्यन्त प्रेम से मग्न हो गये।

सुदामाजी पुराने फटे-से वस्त्र में बँधे चिउड़ा की छोटी-सी पोटली को बगल में छिपाते हुए थे। भगवान ने पोटली खींच ली और उसमें से एक मुट्ठी अपने मुख में डाल ली। उसके बाद दूसरी और ली। उसे प्रेमी पहार का स्वाद पाकर आप अति प्रसन्न हो गये और तीसरी मुट्ठी लेना चाहते थे कि श्री रुक्मिणीजी ने भगवान का हाथ पकड़ लिया और कहने लगी कि इसमें से थोडी-थोडी हम सबों को भी बाँट दीजिये। तब शेष एक मुट्ठी चिउड़ा भगवान् ने श्री रुक्मिणीजी को दे दिया। प्रभु ने सुदामा की धर्मपत्नी के भावों का विचार कर अपार सम्पत्ति दे दी, पर सुदामाजी को इस तत्त्व का कुछ भी पता नहीं। वे सात दिन तक रहकर मित्र के सत्कार से सन्तुष्ट होकर वहाँ से निकल गये।

श्रीकृष्ण के आशीर्वाद के साथ अपनी नगरी में वापस

जब श्री सुदामाजी द्वारका से अपने ग्राम को आये उन्होंने देखा कि वह नया और अत्यन्त सुन्दर नगर हो गया है। उसकी रचना और उसका ऐश्वर्य द्वारका के समान है, उसे देखकर वे विचारने लगे कि मेरी झोंपड़ी और ब्राह्मणी कहाँ गयी? क्या यहाँ किसी राजा ने नगर बसा दिया। इतने में ही भगवत्कृपा से प्राप्त ऐश्वर्य और पति दर्शन के आनन्द से मग्न हुई सुदामाजी को स्त्री सेकड़ों सखी-सहेलियों को साथ लेकर आयी। उसने सादर अपने पतिदेव का स्वागत कर उनकी अनुनय-विनय की। श्रीकृष्ण कृपा से प्राप्त ऐश्वर्य का समाचार सुनाया, तब उन्हें विश्वास हुआ। अपार वैभव को पाकर सुदामाजी उसके मोह और भोगों में आसक्त नही हुए। उन्हें संसारी भोगों की चाह बिल्कुल नही थी। अन्न, वस्त्र आदि का उतना ही प्रयोग करते थे कि जितने से शरीर का निर्वाह हो जाय। वे उसी अपनी पुरानी चाल से चलते थे, जो सात्त्विक सुख और प्रेम के रस से परिपूर्ण थी। ऐसे ही निर्मोही श्रीकृष्ण के प्रिय सखा श्री सुदामाजी को लाख लाख वंदन... जय श्रीकृष्ण।

जय श्रीमन्नारायण...

अटल गुरु भक्ति

- श्री के.रामनाथन
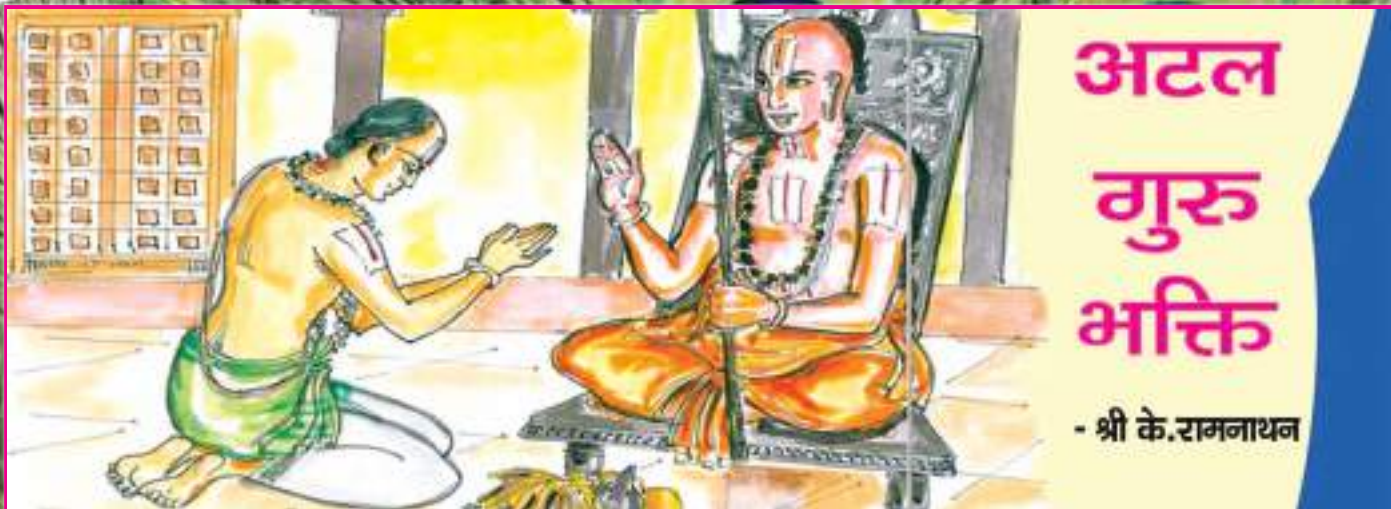
श्री रामानुजाचार्य के प्रिय एवं प्रथम शिष्य के रूप में श्री अनंताल्वार का नाम सर्व प्रसिद्ध है। एक बार गुरु ने अपने शिष्यों को देखकर पूछा, ''तिरुमलै पर्वत पर भगवान श्री वेंकटेश्वर का मंदिर देख-रेख के बिना इर्द-गिर्द दशा में है। इसलिए उसकी मरम्मत और देखभाल करने के लिए आप में से कौन वहाँ जाने को तैयार हैं?'' गुरु की इस बात को सुनकर अनेक शिष्य ऊँचे पर्वत, अधिक ठंड और खूँखार जानवर आदि समस्याओं को सोचकर जाने के लिए हिचकने लगे। तब अनंताल्वार ने आगे आकर गुरु को नमस्कार किया और कहा, ''गुरूजी, यदि आप अनुमति दें तो, मैं अपनी पत्नी के साथ वहाँ जाकर आपकी आज्ञा को पूर्ण करने तैयार हूँ।'' गुरूजी उसकी भक्ति और हिम्मत पर खुश हुए। उन्होंने अनंताल्वार को तिरुमलै में एक तालाब बनाने और भगवान को रोज फूल माला अर्पित करने के लिए एक बगीचे को स्थापित करने की आज्ञा दी।

गुरु की आज्ञा पर अनंताल्वार अपनी पत्नी के साथ तिरुमलै आ पहुँचे। उन्होंने वहाँ बडे परिश्रम से एक पुष्करिणी को बनाया, जो आज भी श्री रामानुजाचार्य पुष्करिणी के नाम से प्रसिद्ध है। उनसे बनाया गया बगीचा अनेक रंगों के फूलों के पौधों से भरा है, जो आज अनंताल्वार बगीचे के नाम से जाना जाता है। अनंताल्वार के काम से खुश हुए गुरूजी ने उनको आज्ञा दी, ''रोज इस बगीचे के फूलों से माला बनाकर उसे भगवान श्री वेंकटेश्वर को अर्पित करके पूजा करो।''

गूरूजी की आज्ञा को सिर आँखों पर मानकर अनंताल्वार अपने नित्य-क्रम के रूप में बडे सबेरे उठकर बगीचे से फूल की कलियों को तोड लाते और माला गूँथते थे। उसके बाद मंदिर जाकर भगवान को पहनाकर पूजा करते थे। उनके इस कार्य से भगवान श्री वेंकटेश्वर एकदम प्रसन्न थे। एक बार भगवान श्री वेंकटेश्वर ने उनकी गुरु भक्ति की परीक्षा करने को सोचा। इसलिए उन्होंने एक दिन सबेरे अपने मंदिर के एक पुजारी को बुलाकर कहा, ''तुम जाकर अनंताल्वार को अभी मुझसे मिलने के लिए कहो।'' वह पुजारी तुरंत माला गूँथते अनंताल्वार को उनके बगीचे में मिला और भगवान की आज्ञा को बताया। यह सुनकर अनंताल्वार ने शांत भाव से कहा, ''अब मैं पूजा के लिए माला गूँथ रहा हूँ। इसलिए तुम भगवान से जाकर कह दो कि, मैं अपना काम पूरा करके आता हूँ।'' पुजारी ने जाकर भगवान से अनंताल्वार की बात बतायी। अनंताल्वार की ऐसी लापरवाही का जवाब सुनकर भगवान एकदम क्रोधित हो उठे। थोडी देर में अनंताल्वार माला सहित भगवान के मंदिर में आये। तब भगवान अपना क्रोध प्रकट करने के लिए द्वार पर परदा डालकर अंदर चले गये। लेकिन अनंताल्वार तो परदे को हटाकर अंदर गये। तब श्री वेंकटेश्वर ने उनको देखकर बडे क्रोध में कहा, ''ठहरो! अपना कदम आगे मत रखो, यह भगवान की आज्ञा है।''

अनंताल्वार तो इस कथन को परवाह किये बिना आगे आये। उनका यह कार्य देखकर भगवान का क्रोध और भी बढ गया। इसलिए उन्होंने अनंताल्वार को देखकर कहा, ''मेरी आज्ञा का उल्लंघन करने की हिम्मत भगवान शिव और ब्रह्म में भी नहीं है। एक साधारण सेवक! तुम में इतनी हिम्मत? मुझे तुम्हारी माला भी नहीं चाहिए और तुम्हारी सेवा भी। तुम अभी

इस मंदिर से बाहर निकल जाओ। मैं तुमको इस पर्वत से निर्वासित करता हूँ। इसलिए तुम तुरंत यहाँ से निकल जाओ।''

भगवान वेंकटेश्वर की इस आज्ञा को सुनकर भी अनंताल्वार जरा भी विचलित नहीं हुए। लेकिन उन्होंने अधिक निडर से उनको जवाब दिया, ''मुझे इस क्षेत्र से निर्वासित करने के लिए आप कौन हैं?'' अनंताल्वार के इस जवाब से भगवान को बडा आश्चर्य हुआ। उन्होंने तुरंत पूछा, ''तुम ऐसा क्यों कहते हो? यह पर्वत तो मेरा निवास स्थान है।'' यह सुनकर अनंताल्वार ने जवाब दिया, ''यह कथन तो प्रसिद्ध है, सकल कल्याण गुणकारी महाविष्णु अपनी पत्नी अलमेलु के साथ यहाँ के पुष्करिणी तीर्थ में आ उतरे हैं। इसका मतलब यह है कि यह तो आपका स्थाई स्थान नहीं है। आप भी यहाँ आकर ठहरे हैं। ऐसी हालत में मुझे यहाँ से निर्वासित भेजने का अधिकार भी आप के लिए नहीं है। आप यह बात ध्यान में रख लीजिये। मैं आपके बुलावे पर इस पर्वत पर नहीं आ पहुँचा। मैं अपने गुरु श्री रामानुजाचार्य की आज्ञा पर आया हूँ।'' यह सुनकर भगवान ने कहा, ''तो इससे क्या हुआ?'' तब अनंताल्वार ने जवाब दिया, ''मेरे गुरूजी की आज्ञा यही थी कि बगीचे में पौधों की कलियाँ खिलने के पहले ही उनको तोडकर माला बनाना और उसे आपके लिए समर्पित करना है। इसलिए आपके बुलावे को सुनकर भी मैं तत्क्षण नहीं आ सका। यदि मैं आपकी बात को मानकर आगया होता तो, गुरु की आज्ञ-भंग का दोष मुझे मिल जाता। यह तो उनकी आज्ञा पर बनायी गयी माला है। इसे पहनना और न पहनना आपकी मर्जी है।'' यह जवाब देकर अनंताल्वार वापस लौटने लगे।

अनंताल्वार की अटल गुरु भक्ति देखकर भगवान श्री वेंकटेश्वर एक दम चकित हो गये। उन्होंने वापस जा रहे अनंताल्वार को रोककर उसकी सच्ची एवं अटल गुरु भक्ति की प्रशंसा की और पूछा, ''तुम्हें क्या वर चाहिए?''

यह सुनकर अनंताल्वार बडी श्रद्धा एवं भक्ति के साथ भगवान के चरण छूकर कहा, ''आप के लिए मेरा यह सेवा कार्य जीवनपर्यंत हो, यही मेरी प्रार्थना है।'' भगवान श्री वेंकटेश्वर ने उनकी इस प्रार्थना को खुशी से स्वीकार कर लिया और अनंताल्वार को उसकी सच्ची गुरु भक्ति का फल दिलाया। ❋

तिरुमल तिरुपति घाट रोड में यान करनेवाले यात्रियों के लिए विज्ञापन

नीचे सूचित समयों के बीच वाहनदारों का प्रवेश रद्ध कर दिया गया है।

१. द्विचक्रवाहन - रात ११.०० बजे से प्रातःकाल ४.०० बजे तक

२. अन्य वाहन (कार और बस) - अर्थरात्रि १२.०० बजे से प्रातःकाल ३.०० बजे तक

३. कुछ अनिवार्य कारणों के कारण उपर्युक्त समयों में परिवर्तन होने की संभावना है।

सूचना - तिरुमल-तिरुपति घाट रोड से यात्रा करनेवाली मोटर घाडीवालें अपना वाहनों से संबंधित 'बार कोड रसीद' को स्कॉनिंग करना अनिवार्य है।

तिरुमल श्रीवारि नित्यकल्याणोत्सव

तेलुगु मूल - डॉ.एन.नरसिंहाचार्य
हिन्दी अनुवाद - श्रीमती पी.सुजाता

श्रीनिवास नित्यकल्याणों के चक्रवर्ति है और नित्योत्सव के मूर्ति भी। वेंकटेश्वरस्वामीजी का हर रोज कल्याणोत्सव चलता है।

श्रीवारि के संपन्न होते हुए नित्योत्सवों में अत्यंत प्रसस्त है नित्यकल्याणोत्सव। हर रोज संपंगि-प्राकार के नित्यकल्याणोत्सव मंडप में संपन्न होते हुए इस कल्याणोत्सव में सैकड़ों दंपति भाग लेते हैं। बिना विशेष उत्सवों के दिनों के, कल्याणोत्सव हर रोज संपन्न सेवा ही है। इसी कारण श्रीस्वामी नित्यकल्याण के सम्राट् बना हुआ है।

श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का कल्याणोत्सव

भगवत् कल्याणोत्सव नाम का कार्यक्रम प्रधान रूप से हमारे अपने योगक्षेम की खातिर मनाया जाता है। योग का मतलब नया जो हासिल होता है। आने का मतलब, संतानहीनों को यदि संतान हुई, तो वह संतान योग कहलाता है। बिना वाहन के लोगों को वाहन की लब्धि हुई, तो वह वाहनयोग कहलाता है। क्षेम का अर्थ है जो है, या वैसे ही जो है अथवा स्थित है। साधारणतया दुनिया में लोग जो नहीं होगा, उसके संपादन व लब्धि की आकांक्षा करते रहते हैं। लोग चाहते हैं - अपने पास जो संपत्ति है, उसकी स्थिरता चाहते हैं। वे योग-क्षेम दोनों भी, भगवत् कल्याण के संपन्न होने से लभित होते हैं।

कल्याण का अर्थ?

'कल्याण' नामक पद का एक बार अर्थ का परिशीलन करें तो, 'कल्यं सुखं नयति प्रापयति - इति कल्याणं' होगा। अर्थात् इसका सामान्यार्थ है, वही कल्याण है, जो सुख का प्रसादन करे। इसी कल्याण को ही विवाह, उद्वाहं, परिणय, पाणि-ग्रहण आदि अनेक नामों से व्यवहरित करते हैं। इसीको जानपद तेलुगु में पेळ्ळि, पेंड्लि, कन्नड़ में 'लग्न', 'मदुवे' और तमिल में 'तिरुमणं' नामों से पुकारते हैं।

वास्तव में पद्मावती-श्रीनिवासों का कल्याण ५ हजार सालों के पूर्व ही संपन्न हुआ था। हमारे से किये जाने वाले कल्याण से उन्हें कोई आवश्यकता नहीं। फिर भी हम अपने योग और क्षेमों की उपलब्धि की चाहत में उस सातपहाड़वाले का कल्याणोत्सव मना रहे हैं। तिरुमल में श्री वेंकटेश्वर

स्वामीजी की उत्सव की मूर्तियों श्रीदेवी भूदेवी समेत श्री मलयप्पस्वामीजी को हर रोज अभिजित् लग्न में संपन्न होने वाले इस परिणयोत्सव में सैकड़ों की तादाद में दंपति हाजिर होते हैं।

श्रीनिवास के कल्याण को पौराणिक नेपथ्य

पूर्व में एक बार महर्षियों को संदेह हो गया था कि 'मोक्ष को प्रसादन करने वाला देव कौन है?' उन ऋषियों की अभ्यर्थना के अनुसार भृगुमहर्षी ने त्रिलोकों का संदर्शन कर, ब्रह्म, विष्णु, महेश्वरों का परीक्षण किया था। आखिर भृगुमहानुभाव ने साबित किया कि साक्षात् विष्णु भगवान ही मोक्ष-प्रदाता है। इस परीक्षाक्रम में ही श्री महाविष्णु के वक्षःस्थल पर लात मारे हुए भृगुमहर्षी पर कृद्ध लक्ष्मीदेवी वैकुंठ छोड़ भूलोक में चली आयी। इसी सिलसिले में नारायण भगवान ने श्रीनिवास बनकर, अरुणानदी के तट पर वसित वकुलमालिका का आश्रय पाया था, जो अपनी रूठी अर्द्धांगी महालक्ष्मी को ढूँढते-ढूँढते भूलोक पधारा था। द्वापरयुग में श्रीकृष्ण के कल्याण के दर्शन भाग्य से जो देवी वंचित रह गयी, उस कल्याणकारी विवाह के संदर्शन भाग्य को पाने के वास्ते जन्मित द्वापर की यशोदा ही वकुलमालिकादेवी थी।

नारायणवनम् में आकाशराजा संतान हीनता से संतानार्थ यज्ञ का संकल्प कर, भूमि की शुद्धि करते हुए हल जोत कर चलाते रहने से हल के किये उस नाल में एक स्वर्ण-पेटिका मिल गयी थी, जिसमें विकसित एक महापद्म के मध्य में शुभ्र वसनों में लपेटी नन्हीं शिशु के रूप में श्री महालक्ष्मी का आविर्भाव हो गया था। वही थी पद्मावतीदेवी।

पद्मावतीदेवी निस्संतान राजा आकाश और धरणीदेवियों का महत लाड़ली बेटी थी, जो जवानी की ड्योढ़ी पर अपनी सखियों के संग क्रीड़ावन में खेलते रहने पर, अनूह्य ढंग से एक मत्त हाथी ने उन बालिकाओं के बीच दौड आकर उन्हें डरा दिया, जिस कारण उन अतःपुर-कन्याओं का बृंद तितर-बितर हो गया। ठीक उसी समय वकुलमालिका के आश्रम में स्थित श्री वैकुण्ठ-विरक्त श्रीमन्नारायण 'श्रीनिवास' के नामधेय से पद्मावती को समीप कर मत्तगज को एक पेड़ की डाली के सहारे दूर भगा दिया। वही वह शुभ मुहूरत था, जिस मधु मधुर बेला में श्रीनिवास और पद्मावती की आँखों ने एकटकी लगायी और दोनों ने एक दूसरे के सौंदर्य पर मुग्ध हो गये थे। निस्संदेह श्रीनिवास पद्मावती की निसर्ग सुंदरता पर बेहद खुश था और उसने पद्मावती के पारिवारिक शुभ समाचार जानना चाहा, तो बदले में राजकुमारी की सखियों ने श्रीनिवास पर और उसके अधिरोहित घोड़े पर पथराव किया था। और, इस तरह अश्व समेत श्रीनिवास पर पत्थरों की बौछार करने के उपरांत उन सखियों ने पद्मावती को बलात् खींचते हुए अंतःपुर में ले चली गयीं, जो तब तक श्रीनिवास के आकर्षण में खिंची चली आयी हुई थी।

उस शुभमय संगम के दिन से श्रीनिवास और पद्मावती दोनों तीव्र विरह-वेदना के शिकार बन गये। पद्मावती का

प्रेम-वृत्तांत उसकी माता धरणीदेवी को मालूम पड़गया था। सहज ही लोक में प्रेमियों का प्रेम-वृत्तांत सारे समाज में प्रकट हो जाने के उपरान्त अपने अपने घरों में प्रकट हो जाता है।

इस ओर श्रीनिवास की प्रेम वेदना उसकी पालाई-माँ को भी बूझ पड़ गयी। इस विषय को लेकर के श्रीनिवास और वकुलमालिका के बीच काफी चर्चा हो गयी थी। श्रीनिवास महाशय ने अपनी माँ को समझा-बुझा कर, अपने विवाह के विषय पर बात करने राजा आकाश के अंतःपुर में भेजा।

मगर श्रीनिवास की आतुरता काफी बढ़ गयी थी। उस शक था कि वकुलमालिका यह प्रेम-दूत-व्यवहार ठीक ढंग से निभा सकेगी या नहीं। इस कारण श्रीनिवास ने स्वयं एक एरुकलसानी (भविष्यवाणी बताते फिरने की एक जात की स्त्री) के भेष धर कर, नारायणवनम् पट्टण के राजा आकाश के अंतःपुर के समीप जा पहुँच कर वहाँ के लोगों को उनकी भविष्यवाणी बता रहा था। यह बात राजांतःपुर में पद्मावती की सखियों को मालूम पड़ गयी थी। राजकुमारी पद्मावती कई दिनों से बीमार-सी पड़ी हुई है। न बुखार है और नाहीं कुछ देह-संकट, मगर लड़की हमेशा आकाश में ताकती हुई कुछ सोचती रहती है। न हँसती और न खुलकर बोलती। वह दुःखित अवश्य है।

लडकियों ने बाहर कोई भविष्यवाणी बताती हुई नारी की बात सुनी, तो झट उसे अंतःपुर में ले गयीं। उसे धरणीदेवी के सम्मुख प्रविष्ट करायीं, तो धरणीदेवी ने एरुकलसानी से आग्रह किया कि वह अपनी दुःखित लाड़ली पुत्री के दुःख का कारण बतावे। तब एरुकलसानी-रूपी श्रीनिवास ने रानी धरणीदेवी को बताया कि राजकुमारी पद्मावती श्रीनिवास पर फिदा हो गयी है। वह उससे बेहद प्यार करती है। यदि उसका श्रीनिवास से ब्याह न हो पाया, उसका जीना दूभर हो जायेगा। हाँ, इस विषय पर बात करने के लिए श्रीनिवास की माँ वकुलमालिका कुछ ही समय में वहाँ पधारेगी।

एरुकलसानी के कहे अनुसार, वकुलमालिका राजा आकाश-रानी धरणीदेवी के सम्मुख प्रविष्ट हुई और राजकुमारी का पाणिग्रहण श्रीनिवास के साथ करने का प्रस्ताव रखा, तो राज-दम्पतियों ने इस प्रस्ताव का झट आमोद प्रकट किया। वकुलमाता अरुणानदी के किनारे स्थित अपने आश्रम में पहुँचकर, श्रीनिवास भगवान को सारा विजयवृत्तांत सुनाया, तो आतुर श्रीनिवास छलाँग मार कर परिणय के लिए सन्नद्ध हो गया। मगर निरा गरीब वकुलमाला ने निराश प्रकट किया कि ब्याह के लिए आवश्यक धन-संपत्ति कहाँ से लायें, क्योंकि ब्याह शाही वंश में संपन्न होने वाला है। इस पर श्रीनिवास ने अपनी माता को ढ़ाढ़स बँधाया और अपने मित्र राजा कुबेर से आवश्यक धन-सहायता करने की माँग की, जो अलकापुरी का राजा था।

इतने में दुष्ट कलियुग का प्रवेश हो चुका और उस कलि के प्रभाव से इष्टमित्र कुबेर ने श्रीनिवास को आवश्यक धन-सामग्री सौंपते हुए, उसके साक्षीभूत के रूप में आवश्यक उधार-पत्र लिख देने की माँग की। श्रीनिवास देव ने कुबेर

के माँगे अनुसार उधार-पत्रयों लिखवाके दिया कि श्री वेंकटाचल पर स्थित अपने दर्शनार्थ आते भक्तलोगों के द्वारा समर्पित की जाने वाली धन-संपत्ति कुबेर सूद के रूप में ग्रहण करे। ऐसा इस कलियुग के अंत होने तक चलता रहेगा।

देवगुरु बृहस्पति आचार्यजी ने-

"श्रुत्वाब्रवी त्स धिषण स्तयो रुत्तरफल्गुनी
सम्मतासुख वृद्ध्यर्थं प्रोच्यते दैवचिंतकैः।
तयो रुत्तरफल्गुन्यां विवाहः क्रियता मिति
वैशाखमासे विधिवत् क्रियता मिति सोऽब्रवीत्।।" कहते हुए वैशाखमास उत्तरफल्गुनी नक्षत्र शुभमुहूरत को श्री पद्मावती-श्रीनिवासजी के अभिवृद्धि कारक परिणय मुहूरत के तौर पर निश्चय किया।

बृहस्पति आचार्यजी से निर्णयित शुभमुहूरत के विषय को सकल देवी और देवताओं को सुझा कर, विवाह में पधारने का आह्वान श्रीनिवास ने अपने वीर, वाहन व भट गरुतमान् के जरिये भेजा।

ब्रह्म, रुद्र आदि सकल देवता तथा परिवार-समेत होकर श्रीनिवास ने राजा आकाश के प्रभंदित विवाह-वेदी का मूल केंद्र नारायणवनम् के लिए प्रस्थान किया, तो सकल मंत्री, पुरोहित, दंडनायक तथा सपरिवार-समेत होकर राजा आकाश ने उनकी अगुवानी कर, बड़े धूमधाम से वरश्रेष्ठ श्रीनिवास सार्वभौम का स्वागत किया था।

शादी-मंडप में पीठिकाओं पर आसीन पद्मावती तथा श्रीनिवास वर-वधुओं पर देव-गुरु बृहस्पति महाराज ने मंत्र--पुष्पों की वृष्टि बरसायी, जिसके साथ सकल मुनिगण सम्मिलित हुए थे। श्रीनिवासभूपति साक्षात् श्रीमन्नारायण था और पद्मावती अपर वैकुंठलक्ष्मी थी, जिनका कन्यादान राजा आकाश और धरणीदेवियों ने किया था। सकल लोकों ने अपना हर्षातिरेक व्यक्त किया तथा सकल देवगणों को साक्षीभूत मानकर श्रीनिवास भगवान ने जगन्माता पद्मावती के गले पर मांगल्य का धारण करवाया था।

यह साक्षात् पुराणों के अंतर्गत के श्रीनिवास और पद्मावती देवियों के कल्याण की शुभ-कथा रही है।

श्रीनिवास का कल्याण - ऐतिहासिक नेपथ्य

मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा ने, जो श्री वेंकटेश्वर की परम भक्तिन थी, अपने विरचित 'श्रीवेंकटाचलमाहात्म्यम्' नामक श्रेष्ठ काव्य में श्री पद्मावती-श्रीनिवास के विवाह-मुहूर्त्त का "सुरुचिर वैशाख शुक्ल दशमी शुक्रवार के दिन के शुभमुहूर्त्त पर संपन्न हुआ बताया है।

लगभग पाँच हजार संवत्सरों के पहले के कलियुग के आरंभ में परिपूर्ण पद्मावती-श्रीनिवासों के कल्याणोत्सव कार्यक्रम को ई. के १५वी शताब्दी तक तिरुमल में विशेष दिनों में, ब्रह्मोत्सवों पर ही मनाया करते थे।

नंदक-अंश के संभूत, पदकवितापितामह श्रीनिवास के परमभक्त ताल्पाका अन्नमाचार्य के तिरुमल-गिरि पर आने के पश्चात् स्वामीजी के कल्याणोत्सव को आरंभ करने के साथ-साथ आप स्वयं विवाह महोत्सव में कन्यादाता का पात्र-निर्वहण किया करते थे। मगर फिर, श्री वेंकटेश्वर स्वामीजी का भारद्वाजस गोत्र था। और अन्नमाचार्यजी का

भी भारद्वाजस गोत्र ही था। एक गोत्र होने पर भी, अम्मवारि के पक्ष में "शादी के बुजुर्ग" के नाते आकाशराजा के स्थान में होकर, श्रीनिवास को कन्यादान करना अपने को भगवान का दिया हुआ महद्भाग्य समझता था। आनंदनिलयी भगवान नित्य-दूल्हा होकर, अन्नमाचार्यजी नित्य-कन्यादाता हुआ करता था। इसी संप्रदाय का अनुसरण करते हुए उस दिन से आज तक भी तिरुमल में संपन्न होने वाले कलियुग के कल्याणकारी उन दम्पतियों के शुभ विवाह में अन्नमाचार्यजी के वंश वाले ही राजा आकाश की तरफ से कन्यादाता बन कर व्यवहार किया करते हुए आ रहे हैं। यह एक खास प्रथा बन कर तिरुमल के कल्याणोत्सवों में चलती आ रही है।

जगत्कल्याण चक्रवर्ती श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का नित्य कल्याण आज भी निर्विघ्न होकर चलता हुआ, तद्वारा श्रीनिवासमहाप्रभुओं के संपूर्ण कृपा-कटाक्षों को पाने के लिए अत्यंत शुभप्रद विशिष्ट सेवा के रूप में यावत् संसार में भक्तलोक में पहचान पाया हुआ है। अन्नमाचार्यजी के अनंतर "ताळ्ळपाका वंशियों ने" श्रीनिवासकल्याणों के निमित्त अनेकानेक ग्रामों, अग्रहारों को ईनाम के तौर पर समर्पित कर देने के प्रस्ताव असंख्य शासनों के जरिये ज्ञात होता है।

तिरुमल श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी के कल्याणोत्सवों का इतिहास कैसे बना?

ताळ्ळपाका अन्नमाचार्यजी ने तिरुमल में श्रीवारि कल्याणोत्सवों का प्रारंभ किया था। कोंडवीटि, सेंदलूरु, मल्लवरम नामक गाँव से आनेवाली १२० वरहाओं को (श्रीवारि कल्याणोत्सव के खाता के तौर पर) श्रीवारि-खजाने में पहुँच जाने का व्यवस्था कर दिया गया था। कल्याणोत्सव के पहले दफे शुरू होने के समय पर, पाँच रोज मनाये जाते थे। इन पाँच दिनों में देवों को विशेष नैवेद्यों का निवेदन किया जाता था। इन उत्सवों को बड़े धार्मिक ढंग से वे भक्तजन मनाते थे।

पंगुनिमास (चाँद्रमान में फाल्गुण) अनुराध नक्षत्र से प्रारंभ होकर उत्तराषाढ़ नक्षत्र से अंत हो जायेगा। ताळ्ळपाका

जगत्कल्याण चक्रवर्ती श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का नित्य कल्याण आज भी निर्विघ्न होकर चलता हुआ, तद्वारा श्रीनिवासमहाप्रभुओं के संपूर्ण कृपा-कटाक्षों को पाने के लिए अत्यंत शुभप्रद विशिष्ट सेवा के रूप में यावत् संसार में भक्तलोक में पहचान पाया हुआ है।

वंशी श्रीनिवास को अपना दामाद, पद्मावती को अपनी पुत्री संभावित कर, १५४६ संवत्सर में इस कल्याणोत्सव का आरंभ किया।

ताळ्ळापाका अन्नमाचार्य के पोता, ताळ्ळपाका चिन्न तिरुमलाचार्यजी ने (लेखा संख्या ३५४-९७) तिरुपति के श्री गोविंदराजस्वामी के मंदिर में दिनांक १५४७ पर कल्याणोत्सव सेवा को नूतन ढंग से प्रवेशित करने पर, इसे चित्तिरै और तै मास में ५ रोज चले जैसा व्यवस्था किया था। हर रोज निवेदन में कौन से पदार्थ रखें और प्रधान अर्चकों तथा जियंगारों को कितनी दक्षिणा समर्पित किया जाय वगैरहों का विवरण इस शासन में दिया गया है। पाँचवें दिन रोहिणी नक्षत्र के आये दिन के पहले चार रोज वैभवपूर्ण ढंग से कल्याणोत्सव मनाते थे। यह उत्सव तिरुपति के श्री गोविंदराजस्वामी के मंदिर में श्री लक्ष्मीदेवी के मंडप (पुंडरीकवल्ली तायार की सन्निधि) में संपन्न होता है।

ताळ्ळपाका परिवार आपने प्रारंभित इन उत्सवों में बहुमान के तौर पर पान के पत्ते और सुपारी युत ताम्बूल मात्र दिया करते थे। इस विवाह महोत्सव के लिए २५० वरहाएँ खर्च करते थे। नेडिया ग्राम से आती हुई आम में से १५० वरहाएँ कल्याणोत्सवों के खर्चों केलिए मंदिर के खाते में जमा कर दी जाती थीं। इस विधान को ताळ्ळपाका चिनतिरुमलय्यंगार ने परिचय किया था। यह उत्सव सालीना, ५ रोजों तक तिरुमल और तिरुपति में बिना रूकावट के निभाते थे। तुप्पिलि अग्रहार से आनेवाली आमदनी और नगरी के सिरिमायि प्रान्त से संबन्धित अंबत्तूरु से आते हुए

४०० रेखै सिक्कों का भी इन उत्सवों में उपयोगित करते थे। यह आमदनी सिर्फ गोविंदराजस्वामी के कल्याणोत्सव के लिए ही नहीं, बल्कि तिरुमल के श्री वेंकटेश्वरस्वामी के नित्य कैंकर्यों के लिए भी खर्च किया करते थे।

कल्याणोत्सव के समय में चार माड़ावीथियों में बड़े जूलुस, देवताओं के लिए विशेष नैवेद्य समर्पित किये जाते थे। उस कल्याणोत्सव में मलयप्पस्वामीजी दूल्हा तथा श्रीदेवी, भूदेवी अम्मवारु दुलहिनें होती थीं। इस समय में, इस प्रांत में पर्व का वातावरण एवं अंगरंग-वैभव छाया हुआ होता था। तिरुपति के इर्द-गिर्द इलाकों में एक भक्ति की लहर उठ पड़ती थी।

इस कल्याणोत्सव में भाग लेनेवाले प्रधान अर्चकों, जियंगारों, एकांगी वेदपारायणदारों तथा बचे कैंकर्यदारों को दक्षिणा तथा इतर बहुकरणों को चुकाते थे। कालक्रमेणा १५० रेखै-सिक्के इन उत्सवों के निर्वहणार्थ पर्याप्त हो नहीं पा रहे थे। कोंडवीडु राज्य से संबन्धित विनुकोंडा के सिरिमायि-प्रान्त की आय को भोगते हुए पेदतिरुमलाचार्य के पुत्र तिरुवेदय्यन (तिरुवेंगलनाथन्) ने अपनी आमदनी को इन उत्सवों में व्यय करने का निश्चय किया था। इस हिसाब से संवत्सर में आते हुए ४७० रेखै सिक्कों की आमदनी १५५४ वे साल में 'श्री भाण्डागार (आलय खजाना)' में जमा कर दिया गया था। इस धन को उत्सवों के लिए खर्च कर दिया जाता था। (शासन नं ४१९ जी.टी.) तिरुवेंगलनाथन् द्वारा १५५८ समय में, श्री वेंकटेश्वर का कल्याणोत्सव और कुछ नैवेद्यों के साथ निर्वाहित किया जाता था। पाँच दिनों तक संपन्न होते हुए कल्याणोत्सव में तिरुवेंगलनाथन् के हयाम् में प्रथम था। इसी समय से ही संप्रदायबद्ध ध्वजारोहण वाला कार्यक्रम शुरू हो गया था। (ध्वजारोहण सामान्यतया ब्रह्मोत्सवों के समय में निर्वहित करते हैं, मगर वैखानस आगम के प्रकार, यह किसी भी उत्सवों में निभाने की सुविधा है।)

श्रीनिवास के लिए नित्य संपन्न होने वाले कैंकर्यों में भक्तजनों के अधिक संख्यकों के भाग लेने वाली सेवा भी नित्य कल्याणोत्सव ही है। अन्नपान ही न गरीब से लेकर, करोंड पतियों तक सबके सब समान ढंग से भाग लेने वाले श्रीनिवास के नित्य कल्याण उत्सवों में शरीक होने वाले भक्तों की तादाद दिन-ब-दिन बढ़ती ही जा रही है।

श्रीवारि प्रतिरूप मलयप्पस्वामीजी श्रीदेवी भूदेवी समेत भाग लेने का यह कल्याणोत्सव पूर्व सोने के दरवाजे के सामने ही संपन्न होता था। उसके बाद भक्तों की सुविधा में विमान-प्रदक्षिण मार्ग में स्थित कल्याण-मंडप में, तत्पश्चात् कुछ समय के लिए रंगनायक-मंडप में हुआ करता था। रोज व रोज कल्याणोत्सव में भाग लेने वाले भक्तों की संख्या बढ़ती जाने के कारण, वहाँ से भी कल्याण-वेदी बदल कर प्रस्तुत संपंगि-प्रदक्षिण में दक्षिण की दिशा में स्थित 'श्री वेंकटरमणस्वामी कल्याण-मंडप' नाम से प्रत्येक तौर पर बनाई-हुई वेदिका पर श्रीनिवास के कल्याण का निर्वहण कर रहे हैं।

आर्जित सेवा के तौर पर कल्याणोत्सव

कालांतर में कल्याणोत्सव आर्जित सेवा में बदला हुआ है। पहले यह उत्सव भक्तों द्वारा पैसा चुकाने के दिनों में ही मनाया जाता था। उसके बाद, नित्य कल्याण-हरा तोरण नाम की कहावत के अनुसार, भक्तों की कामना के अनुसार नित्य मनाये जाने का रिवाज बन गया था। वैखानस आगम के प्रकार, विष्णु भगवान को मनाये जाने वाले तीन उत्सवों में यह कल्याणोत्सव श्रद्धोत्सव अथवा काम्योत्सव के नाम पर पुकारा जा रहा है। बाकी के दोनों को कालोत्सव अथवा नैमित्तिकोत्सव कहते हैं। श्री वेंकटेश्वरस्वामी

के कटाक्ष को पाये भक्तलोग, ति.ति.देवस्थान के द्वारा करार किये हुए रुस्म चुकाकर कल्याणोत्सव मनाने की मिन्नत माँगते हैं। आजकल रु.१०००/- चुकाकर श्रीवारि के नित्य कल्याणोत्सव में भाग ले सकते हैं। गृहस्थ यानी पति-पत्नी दोनों को ही अनुमति देते हैं। इन दम्पतियों को कल्याणोत्सव के अनंतर-अंगोछा-१, चोली-१, बड़े लड्डू-२, वड़े-२, छोटे लड्डू-५ प्रसाद के तौर पर प्रसादित करते हैं।

श्रीवारि नित्यकल्याणोत्सव के संपन्न होने का क्रम...

श्रीवारि के अर्चकों के निवास से कल्याणोत्सव के कैंकर्य के निर्वहित वैखानस अर्चक, बृहस्पति के तौर पर व्यवहरित करने वाले एक और अर्चक के साथ मिल कर, हल्दीरंग के वस्त्रों का धारण कर, 'वोचि' नामके व्यक्ति लकडे के दीप कांति को पकड़ कर संपंगि-प्राकार में स्थित कल्याणमंडप में प्रवेश कर, श्रीवारि की पाद-सेवा कर लेते हैं।

तभी तक श्री मलयप्पस्वामीजी पूरब की दिशा को हो करके एक सोने के सिंघासन पर आसीन होते हैं। श्रीवारि की दायीं ओर एक अलग सोने के पीठक पर श्रीदेवी भूदेवी माताएँ आसीनकरायी गयी होती हैं। उत्सव की मूर्तियाँ सुडौल गुँथी हुई पुष्पमालाओं से अलंकृत हो कल्याणोत्सव के लिए संसिद्ध रहेंगी। दुपहर १२.०० घंटों पर अभिजिल्लग्न में नित्यकल्याणोत्सव सभा-प्रार्थना से प्रारंभ होता है। उसके पश्चात् क्रम से विष्वक्सेनाराधना, पुण्याहवाचन, सद्यो अंकुरार्पण, रक्षा-बंधन, अग्नि प्रतिष्ठा आदि वैदिक क्रियाएँ

निभाते हैं। अनंतर श्रीवारि को मधुपर्क का निवेदन, पाद-प्रक्षालन, कूर्चप्रधान चला कर, स्वामी तथा अम्मवारों के बीच मंत्रपूर्वक तेरसेल्ला (अंतरपट्टं) लगाते हैं। स्वामीवारु तथा अम्मवारों को नूतन वस्त्रों का समर्पण होयेगा। महासंकल्प के हिस्से में श्रीवारु और अम्मवारों के गोत्र-प्रवरों का पठन-पाठन किया जाता है। तदुपरांत मांगल्य की आराधना होगी। सदर माँगल्य को स्वामी के हाथों को लगा कर, देवेरियों को धरायेंगे। मंगल आरती उतारते हैं। अर्चक होम-कुंड पर प्रधान-होम, लाज होम, पूर्णाहुति, रक्षा-तिलक का धारण आदि कैंकर्यों को संपन्न करते हैं। पश्चात् उसके - वारणमायिरम्, मालापरिवर्त्तनं, अक्षतारोपण शास्त्रोक्त ढंग से निभाने के उपरांत, कर्पूर-नीराजन का समर्पण करते हैं। महानिवेदन के बाद कर्पूर-आरती के समर्पण के साथ श्री श्रीनिवास भगवान का नित्यकल्याणोत्सव वैभवपूर्ण ढंग से समाप्त होता है।

कल्याणोत्सव का फल

''उभयदेवेरियों से मिले श्री स्वामीजी को, श्री कल्याणोत्सव के क्रम में जो सेवित करेंगे, उसके सारे पाप उसी क्षण में कट जाने के साथ-साथ, उनके मातृ-पितृ के वंशों के पिछली १० पीढ़ियों, आगे की १० पीढियों के लोग पापों से मुक्त होकर आखिरकार वे सब विष्णुलोक की संप्राप्ति पायेंगे!! स्त्रियाँ नित्य सुवासिनियाँ बन कर विराजेंगे।'' ऐसा मरीचिमहर्षी ''विमानार्चनकल्प'' नामक ग्रन्थ में कल्याणोत्सव-वीक्षण के फल को सुझाया हुआ है। अस्तु।

कीलपट्ल मंदिर

तेलुगु मूल - श्री आई.एल.एन.चंद्रशेखरराव

हिन्दी अनुवाद - डॉ.बी.के.माधवी

तिरुमल में विराजमान श्री वेंकटेश्वरस्वामी से संबंधित कुछ मंदिर हैं। उनमें 'कीलपट्ल' एक है। कीलपट्ल के क्षेत्र में श्री वेंकटेश्वरस्वामी 'श्री कोनेटिरायस्वामी' के नाम से विराजमान होकर पूजाओं को स्वीकार कर रहे हैं।

भृगुमहर्षी की प्रतिष्ठा

स्थल पुराण के द्वारा विदित होता है कि - कीलपट्ल श्री कोनेटिरायस्वामी को भृगुमहर्षी ने प्रतिष्ठित किया है। भृगुमहर्षी ने विष्णु भगवान को अपने पैर से धकेलने के कारण उसको मिले पाप को दूर करने का मार्ग बताने के लिए महर्षियों से पूछा। यह कथन प्रचार में है कि- पापप्रक्षालन के लिए कौंडिन्य महर्षी के सलाह से भृगुमहर्षी ने सात जगहों में श्री वेंकटेश्वरस्वामी को प्रतिष्ठित किया है। स्थल पुराण के द्वारा विदित होता है कि उनमें 'कीलपट्ल' एक है।

लेकिन भृगुमहर्षी के द्वारा प्रतिष्ठित भगवान सामान्य लोगों को दिखाई नहीं देता है। केवल तपःसंपन्न लोगों को ही दर्शन देता है। भगवान सबको दर्शन देने के जैसे विराजित होने के पीछे और एक कहानी निक्षिप्त है।

श्री पद्मावती श्रीनिवास दोनों विवाह के बाद श्रीनिवासमंगापुरम् में आस-पास के जगहों में विहार करने लगे। उस विहार के अंतर्गत एक बार 'कीलपट्ल' जाकर थोडे समय बीता है। इस विषय को जानकर सब महर्षियों ने वहाँ जाकर पूजाएँ करके यही रहने की प्रार्थना की। उनकी इच्छा से प्रसन्न स्वामी ने कहा कि अपने अंश निकट ही पुष्करिणी में है, वहाँ से निकालकर प्रतिष्ठित करके पूजा करने के लिए कहने के बाद स्वामी वहाँ से निकल पडे। महर्षियों ने पुष्करिणी में खोजने के बाद स्वामी की मूर्ति मिलने से उस विग्रह को बाहर निकालकर प्रतिष्ठित किये हैं। इस प्रकार स्थलपुराण के द्वारा विदित होता है कि - कीलपट्ल में कोनेटिरायस्वामी विराजित हुए हैं, पुष्करिणी में (कोनेरु) मिलने के कारण स्वामी को कोनेटिरायस्वामी नाम सार्थक हुआ है।

पुरातन इतिहास

इतिहास के द्वारा विदित होता है कि - कीलपट्ल के श्री कोनेटिरायस्वामी के मंदिर को ई. सन्. ९, १० शताब्द के काल में पल्लवों के द्वारा निर्माण हुआ है। बाद के काल में विजयनगर चक्रवर्तियों ने स्वामी का दर्शन करके आनंदित होकर मंदिर के निर्माण के लिए कृषि किये हैं।

थोडे समय तक पुंगनूरु के संस्थानाधीशों के हाथों में रहा था। ई. सन्. २०१२ में तिरुमल तिरुपति देवस्थानवालों ने इस मंदिर के कार्यभार को स्वीकार करके, मंदिर को सर्वांग सुंदर रूप से सजाये हैं। इतिहास के द्वारा विदित

होता है कि पदकवितापितामह अन्नमाचार्य ने भी इस मंदिर का दर्शन किये हैं।

विशालप्रांगण में दर्शनीय सुंदर मंदिर

कीलपट्ल क्षेत्र में श्री कोनेटिरायस्वामी के मंदिर विशाल प्रांगण में शोभायमान रूप से दर्शन देता है। मंदिर के प्रवेश द्वार पर राजगोपुर दर्शन देता है। इस शिखर पाँच मंजिलों के ऊपर के भाग में सात कलशों से शोभायमान है। इस द्वार से मंदिर में प्रवेश करते ही सामने बलिपीठ, ध्वजस्तंभ, गरुडाल्वार मंडप दर्शन देते हैं। प्रधान मंदिर मुखमंडप अंतरालय, गर्भालयों के साथ है। मुखमंडप से अंतरालय में प्रवेश करने के द्वार के दोनों ओर जय विजय विराजमान है। प्रधान गर्भालय में श्री कोनेटिरायस्वामी रूपरेखा विलासों से तिरुमल श्री वेंकटेश्वरस्वामी के समान दर्शन देते हैं।

शंख, चक्र, वरद, कटि हस्तों से, कई आभरण, पुष्पमालाओं, तुलसी मालाओं के साथ दिव्यमनोहर रूप से स्वामी करुणा कटाक्षों को प्रसरित करते हुए दर्शन देते हैं। स्वामी के गर्भालय के दाये ओर रहे प्रत्येक मंदिर में स्वामी की देवी श्री लक्ष्मीदेवी विराजमान है। श्री लक्ष्मीदेवी चतुर्भुजाओं के साथ दोनों हाथों से कमल को, और दोनों हाथों में अभय, वरद मुद्राओं को धारण करके दर्शन देती है। प्रधान देवता मूर्तियों के साथ मंदिर के प्रांगण में श्री अभयांजनेयस्वामी, श्री वराहस्वामी, श्रीदेवी भूदेवी समेत श्री चेन्नकेशवस्वामी और आल्वारों का दर्शन कर सकते हैं। मंदिर के प्रांगण में ईशान्य दिशा में पुष्करिणी है। प्रधान आलय के बाहर मंदिर के प्रांगण में कालीयमर्दन, हनुमान को आलिंगन किये हुए श्रीराम के जैसे विग्रह भक्तजनों को नयनानंद भरा देता है।

पहले श्री कोनेटिराय के दर्शन करने के बाद ही तिरुमल जाना है यही स्थानिकों का विश्वास है। इसीलिए वहाँ के लोग पहले इस स्वामी का दर्शन करने के बाद ही तिरुमल जाना विशेष है।

उत्सवशोभा

हर दिन पूजाएँ होनेवाले कीलपट्ल श्री कोनेटिरायस्वामी को हर साल वैशाखमास से शुक्लपक्ष अष्टमी से लेकर ९ दिनों तक ब्रह्मोत्सव अंगरंगवैभव से किया जाता है।

इसमें विशेष रूप से कई वाहन सेवाओं का निर्वहण किये हैं। उगादि, संक्रांति, दिवाली, देवीनवरात्रियाँ, धनुर्मास, मुक्कोटि एकादशी जैसे पर्वदिनों के संदर्भ में प्रत्येक पूजाएँ, उत्सवों का निर्वहण करते हैं।

कहाँ है?

आंध्रप्रदेश राज्य चित्तूर जिले में गंगवरम् मंडल में पलमनेरु से बस, आटो का सुविधा हैं। चित्तूर से ४७, तिरुपति से १२०, मदनपल्लि से ५५ किलोमीटर दूर पर कीलपट्ल है। पलमनेरु जाकर कीलपट्ल जाना आसान है। चेन्नै, तिरुपति, कडपा, कर्नूल, हैदराबाद, बेंगुलूरु, चित्तूरों से पलमनेरु को बस का सुविधा है।

तिरुमल श्री वेंकटेश्वरस्वामी का दर्शन किये अनुभूति को प्रसाद करनेवाला श्री कोनेटिरायस्वामी का दर्शन करके भक्तजन पुनीत हो सकते हैं।

तिरुपति एवं उसके आसपास के दर्शनीय क्षेत्र

श्री गोविंदराजस्वामी मंदिर : आंध्रप्रदेश के चित्तूर जिले में तिरुमल पर्वत के पदभाग में तिरुपति स्थित है। वैष्णवधर्म के प्रवर्तक श्री रामानुज से संबंध रखनेवाला यह पुरातन शहर है। ११३० ए.डि. में प्रख्यात वैष्णवधर्म के प्रवर्तक श्री रामानुज ने श्री गोविंदराजस्वामी मंदिर का निर्माण कर, परिसर के छोटे प्रांत को आवास योग्य बनाकर, उसे 'तिरुपति' का नाम रखा। पुराणों के अनुसार, यहाँ के मूर्ति की वैष्णव सम्प्रदाय के प्रवर्तक एवं महान आचार्य श्री रामानुज ने प्रतिष्ठा की। भगवान तो शयन मुद्रा में है। इस प्रांगण में श्री आण्डाल, श्री पार्थसारथी एवं श्री वेंकटेश्वरस्वामी के मंदिर हैं।

श्री कोदंडरामस्वामी मंदिर : तिरुपति रेल्वेस्टेशन से एक कि.मी. दूरी पर श्रीराम का मंदिर है। लंका से वापस आते वक्त सीता लक्ष्मण सहित श्रीराम के तिरुपति आगमन के स्मरण में इस मंदिर का निर्माण किया गया है। शिलालेख के आधार से १५वीं शताब्दी में सालुव नरसिंह का अभ्युदय के लिए नरसिंह मोदलियार नामक व्यक्ति ने इस मंदिर का निर्माण किया।

श्री कपिलेश्वरस्वामी मंदिर : तिरुपति से तीन कि.मी. दूरी पर भगवान शिव का मंदिर है। कपिल महर्षि द्वारा प्रतिष्ठापित होने के कारण भगवान को कपिलेश्वर और तीर्थ को कपिलतीर्थम् का नाम प्रचलित हो गया है।

अलमेलुमंगापुरम् (तिरुचानूर) : तिरुपति से ५ किलोमीटर दूरी पर यह मंदिर स्थित है। श्री वेंकटेश्वरस्वामी की पत्नी श्री पद्मावतीदेवी का मंदिर है। कहा जाता है कि तिरुचानूर में विराजमान श्री पद्मावतीदेवी के दर्शन के बाद ही तिरुमल-यात्रा की सफलता प्राप्त होगी। श्री पद्मावतीदेवी मंदिर की पुष्करिणी को 'पद्मसरोवर' कहा जाता है। पुराणों के अनुसार भगवती देवी ने इस पुष्करिणी के पद्म में स्वयं अवतार लिया है।

श्रीनिवासमंगापुरम् : तिरुपति से १२ किलोमीटर दूरी पर यह मंदिर स्थित है। ग्राम की आग्नेय दिशा में श्री कल्याण वेंकटेश्वरस्वामी का मंदिर है। पुराणों में कहा गया है कि श्री वेंकटेश्वरस्वामी ने श्री पद्मावतीदेवी से विवाह करने के बाद तिरुमल जाने के पूर्व कुछ समय तक इस क्षेत्र में ठहरे। १६वीं सती में ताल्लपाक चिन्न तिरुवेंगडनाथ ने इस मंदिर का जीर्णोद्धारण किया।

नारायणवनम् : तिरुपति से लगभग २२ किलोमीटर की दूरी पर आग्नेय दिशा में स्थित मंदिर में श्री कल्याण वेंकटेश्वरस्वामी विराजमान है। इसी पवित्र क्षेत्र में आकाशराजा की पुत्री श्री पद्मावतीदेवी एवं श्री वेंकटेश्वरस्वामी का विवाह सम्पन्न हुआ था। इस महान घटना की याद में आकाशराजा ने इस मंदिर का निर्माण करवाया।

नागलापुरम् : इस मंदिर में श्री वेदनारायणस्वामी विराजमान हैं। तिरुपति से लगभग ६५ कि.मी. दूरी पर आग्नेय दिशा में यह मंदिर स्थित है। विजयनगर शैली को प्रतिबिंबित करनेवाली यह सुन्दर नमूना है। गर्भगृह में दोनों ओर श्रीदेवी व भूदेवी सहित मत्स्यावतार रूपी श्री विष्णु की मूर्ति विराजमान हैं। मंदिर की विशिष्टता का प्रमुख कारण है, सूर्याराधना। हर वर्ष मार्च महीने में सूर्य की किरणे तीन दिन तक गोपुर से होती हुई गर्भगृह में स्थित मूर्ति को स्पर्श करती हैं। इसे सूर्य द्वारा भगवान की आराधना मानी जाती है। विजयनगर सम्राट श्रीकृष्णदेवराय ने अपनी माता के अनुरोध पर इस मंदिर का निर्माण कराया।

अप्पलायगुंटा : अप्पलायगुंटा में श्री प्रसन्न वेंकटेश्वरस्वामी का मंदिर है। तिरुपति से १५ कि.मी. दूरी पर स्थित है। ब्रह्मोत्सव तथा प्लवोत्सव आदि को बडे पैमाने पर मनाया जाता है। इस प्राचीन मंदिर में श्री पद्मावतीदेवी एवं आंडाल की मूर्तियाँ विराजमान हैं। कार्वेटिनगरम् के राजाओं से निर्मित इस मंदिर के सामने श्री आंजनेय स्वामी की मूर्ति है। दीर्घकालीन व्याधियों के निवारण के लिए यहाँ विराजमान श्री आंजनेय स्वामी की भक्तों द्वारा पूजार्चना की जाती है।

कार्वेटिनगरम् : तिरुपति से ५८ कि.मी. दूरी पर पुत्तूर के निकट यह मंदिर स्थित है। रुक्मिणी, सत्यभामा सहित श्री वेणुगोपालस्वामी के दर्शन कर सकते हैं। प्राचीन काल में नारायणवनम् के राजाओं ने इसका निर्वहण किया। हनुमत्समेत श्री सीताराम व लक्ष्मण की एकशिला मूर्ति इस मंदिर में विराजमान हैं।

जनवरी महीने का राशिफल

- डॉ.केशव मिश्र

मेषराशि - मासफल सामान्य रहेगा। इष्टसिद्धि में विलम्ब की संभावना रहेगी। रक्तदोष-चोट की संभावना रहेगा। राजनीति में सफलता मिलेगी। सुन्दरकाण्ड पाठ एवं दुर्गासप्तशती पाठ करना श्रेयस्कर होगा।

वृषभराशि - मासफल मिश्रितफलद है। वातरक्तदोष, घाव या चोटों की संभावना रहेगी। स्थान परिवर्तन, व्यर्थ भ्रमण की संभावना रहेगी। राहु-केतु की उपासना करें। मंगलव्रत करना श्रेयस्कर होगा।

मिथुनराशि - मासिक फल मिश्रित है। यत्र तत्र भ्रमण न करे चोटों की संभावना रहेगी। स्थान परिवर्तन तथा झंझट की संभावना रहेगी। शनि की साढेसाती शान्त्यर्थ मंगलव्रत, सुन्दरकाण्ड पाठ करना श्रेयस्कर होगा।

कर्कराशि - मास शुभफलप्रद है। शिक्षा, व्यापार एवं कृषि से लाभ होगा। वातरक्तदोष, मूत्रविकार, उदरपीड़ा एवं ज्वर की संभावना सामान्य रूप से संभावित रहेगी। रवि व्रत करे।

सिंहराशि - मासिक फल मिश्रित है। सन्तान सुख में बाधा तथा पारिवारिक सुख अनुकूल रहेगा। वातरक्तदोष, उदरपीड़ा, घाव या चोट की संभावना रहेगी। व्यर्थ भ्रमण की संभावना रहेगी। भगवान सूर्य की उपासना करें।

कन्याराशि - पारिवारिक सुख मध्यम तथा सन्तान सुख में कमी रहेगी। राजनीति में सफलता मिलेगी। धर्मकृत्य सम्पादित होंगे। शिक्षा, उद्योग, व्यापार एवं कृषि कार्यों में आंशिक लाभ होगा। श्रीविष्णुसहस्रनाम का पाठ करें।

तुलाराशि - मासफल शुभद है। धर्म कार्यों में अभिरुचि बनी रहेगी। स्थान परिवर्तन एवं भ्रमण का योग लगेगा। वातरक्तदोष, उदरपीड़ा, घाव या चोट की संभावना रहेगी। दुर्गापाठ करना श्रेयस्कर होगा।

वृश्चिकराशि - शनि की साढेसाती चल रही है। अतःरक्तदोष, घाव, चोट, उदरपीड़ा एवं शत्रुबाधा सम्भावित है। पारिवारिक सुख मध्यम तथा सन्तानसुख अनुकूल रहेगा। अत एव हनुमान दर्शन पूजन स्तोत्र पाठ लाभ कर होगी।

धनुराशि - शनि की साढेसाती चल रही है। अतःपारिवारिक तथा सन्तानसुख मिश्रित रहेगा। स्थान परिवर्तन, व्यय, भ्रमण एवं शत्रुबाधा सम्भावित है। राहु-केतु की उपासना करे श्रेयस्कर होगा।

मकरराशि - शनि की साढेसाती का प्रभाव चल रहा है। अतःकार्य में बाधा व्यर्थ भ्रमण विरोध एवं कलह की संभावना रहेगी। कृषि, व्यापार, शिक्षा उद्योग एवं राजनीति में विलम्ब से आंशिक सफलता मिलेगी। चोट एवं पाँव में दर्द संभावित है। मंगलव्रत एवं दुर्गापाठ करना लाभदायक रहेगा।

कुम्भराशि - मासफल शुभदायक है। पारिवारिक तथा सन्तानसुख मध्यम है। कृषि-उद्योग, व्यापार एवं शिक्षा के क्षेत्र में लाभकर स्थिति रहेगी। कृषि-व्यापारिक क्षेत्रों से लाभ प्राप्त होगी। राहु-केतु की उपासना लाभकर होगी।

मीनराशि - मासफल शुभदायक है। भ्रमण का योग है। अतःसंचन करे। सन्तान सुख अनुकूल रहेगा। नवीन कार्य में सफलता मिलेगी। व्यापार एवं शिक्षा क्षेत्रों से लाभ मिलेगा। बृहस्पति की उपासना लाभकर होगी।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति

(आध्यात्मिक मासिक पत्रिका)

चंदा भरने का पत्र

१. नाम : ....
(अलग-अलग अक्षरों में स्पष्ट लिखें) ....
....
पिनकोड ....
मोबाइल नं ....

२. वांछित भाषा : ☐ हिन्दी ☐ तमिल ☐ कन्नडा ☐ तेलुगु ☐ अंग्रेजी ☐ संस्कृत

३. वार्षिक / जीवन चंदा :

४. चंदा का पुनरुद्धरण :

(अ) चंदा की संख्या :

(आ) भाषा :

५. पेय रकम :

६. पेय रकम का विवरण :

नकद (एम.आर.टि. नं) दिनांक :

धनादेश (कूपन नं) : दिनांक :

मांगड्राफ्ट संख्या : दिनांक :

प्रांत :

दिनांकः चंदा भरनेवाला का हस्ताक्षर

- वार्षिक चंदा : रु.६०.००, जीवन चंदा : रु.५००-००
- नूतन चंदादार या चंदा का पुनरुद्धार करनेवाले इस पत्र का उपयोग करें।
- इस कूपन को काटकर, पूरे विवरण के साथ इस पते पर भेजें–
- संस्कृत में जीवन चंदा नही है, वार्षिक चंदा रु.६०-०० मात्र है।

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, के.टी.रोड,
तिरुपति-५१७ ५०७. (आं.प्र)

नूतन फोन नंबरों की सूचना

चंदादारों और एजेंटों को सूचित किया जाता है कि हमारे कार्यालय का दूरभाष नंबर बदल चुका है और आप नीचे दिये गये नंबरों से संपर्क करें–

कॉल सेंटर नंबर
0877 - 2233333

चंदा भरने की पूछताछ
0877 - 2277777

अर्जित सेवाएँ और आवास के अग्रिम आरक्षण के लिए कृपया इस नंबर से संपर्क करें–

STD Code:
0877

दूरभाष :

कॉल सेंटर नंबर :
2233333, 2277777.

Edited and Published on behalf of T.T.Devasthanams by **Dr.K.Radha Ramana, M.A., M.Phil, Ph.D.,** Chief Editor, T.T.D. and Printed at T.T.D. Press by **Sri R.V.Vijaykumar,** B.A., B.Ed., **Dy.E.O.,** (Publications & Press), T.T.D. Press, Tirupati-517 507.

तिरुमल श्रीवारि के मंदिर में ति.ति.दे.
नहा जीयर स्वामीजी के आध्वर्य में कार्तिक दीपोत्सव

तिरुमल श्रीवारि आलय में कार्तिक दीप जलाते हुए
ति.ति.दे. कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री अनिलकुमार सिंघल, आई.ए.एस.
और तिरुमल संयुक्त कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री के.एस.श्रीनिवासराजु, आई.ए.एस.

तिरुमल श्रीवारि आलय में कार्तिक दीपों की दिव्यकांतियाँ

तिरुमल श्रीवारि पुष्करिणी में कार्तिक दीपोत्सव का दृश्य

तिरुमल श्रीवारि को (१.१२.१८) पर दर्शित उभय तेलुगु
राज्यों के राज्यपाल माननीय श्री ई.एस.एल.नरसिंहन्‌जी

माननीय राज्यपाल दंपतियों को श्रीवारि तीर्थप्रसादों का प्रदान
करते हुए ति.ति.दे. कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री अनिलकुमार सिंघल, आई.ए.एस.

हर साल ति.ति.दे. द्वारा निर्वहित सनातन धार्मिक
शिक्षणों की परीक्षाओं से संबंधित पुरस्कारों के प्रदानों के दृश्य

ति.ति.दे. [illegible] निर्वहित करने का [illegible] (अलवार मंदिर) कार्यक्रम
के लिए पुष्प-थाल ले जाते हुए ति.ति.दे. न्यास मंडली के अध्यक्ष श्री पुट्टा सुधाकर यादव,
तिरुपति संयुक्त कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री पोला भास्कर, आई.ए.एस., ति.ति.दे.
सुरक्षा व चौकसी विभाग के प्रधान उप अधिकारी श्री गोपिनाथ जेट्टी, आई.पी.एस.
और अन्य ति.ति.दे. उप अधिकारी